ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक-
वेद, यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

जुलाई 2014

मूल्य 15 रू.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ में योग शिविर का उद्घाटन करते हुए

(विवरण पढ़े पृष्ठ 4 पर)

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ में बृहद् यज्ञ एवम् निःशुल्क ध्यान योग विज्ञान शिविर के उद्घाटनकर्ता डॉ. राजेन्द्र सिंह सैनी, प्रबन्ध निदेशक ऑक्सफोर्ड स्कूल, बहादुरगढ़ को स्मृति चिन्ह एवम् पटका देकर सम्मानित करते हुए बाएं से श्री राजवीर जी, श्री सत्यपाल जी वत्स, स्वामी धर्ममुनि जी, वानप्रस्थी ईश मुनि जी, श्री लक्ष्मणानन्द, आचार्य राजहंस मैत्रेय, महात्मा विश्वमुनि जी एवम् रामानन्द जी।

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रूखनगर गुड़गांव में मासिक सत्संग

(विवरण पढ़े पृष्ठ 5 पर)

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रूखनगर गुड़गांव में मासिक सत्संग के अवसर पर श्री ललित कुमार जी सुपुत्र श्री रमेश चन्द्र जी, सिद्धिपुरा, दिल्ली पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी को 12 पंखे दान में प्रदान करते हुए। साथ में बाएं से आचार्य राजहंस मैत्रेय जी, वानप्रस्थी ईशमुनि जी, महात्मा विश्वमुनि, स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी जी तथा अन्य।

ओ३म् ओ३म्

आत्मशुद्धि आश्रम संस्थापक कर्मयोगी
पूज्य श्री आत्मस्वामी जी महाराज

आगामी आश्रम स्थापना दिवस समारोह का निमन्त्रण

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ द्वारा संचालित अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा खुर्रमपुर रोड़, फर्रूख नगर, गुड़गांव का 7वां स्थापना दिवस 8 और 9 अगस्त 2014 शुक्र और शनिवार को बड़े उत्साह के साथ मनाया जायेगा। इस अवसर पर बृहद्यज्ञ, योग साधना शिविर एवं विभिन्न सम्मेलनों का आयोजन किया जायेगा। आप सादर आमन्त्रित हैं।

❑❑❑

राष्ट्र धर्म और मानवता के सबल रक्षक यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ का 48वां स्थापना दिवस 26 सितम्बर से 2 अक्टूबर 2014 तक योग साधना शिविर एवं विभिन्न सम्मेलनों के साथ श्रद्धा एवं उत्साह के साथ आयोजित किया जायेगा। आप सभी सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

प्रिय बन्धुओं! मास जुलाई में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी अगस्त अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या IFSC-A0211948 में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे। - व्यवस्थापक

॥ ओ३म् ॥

आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

आषाढ़-श्रावण सम्वत् 2071 जुलाई 2014

सृष्टि सं. 1972949114 दयानन्दाब्द 191

वर्ष-13) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी (अंक-7

(वर्ष 44 अंक 7)

प्रधान सम्पादक

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी'

आचार्य राजहंस मैत्रेय

❖

सह सम्पादक

स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, डॉ. मुमुक्षु आर्य

❖

परामर्श दाता: **गजानन्द आर्य**

❖

कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री

(8529075021)

❖

उपकार्यालय प्रबन्धक

ईशमुनि (9991251275, 9812640989)

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम

खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)

❖

व्यवस्थापक: **चन्द्रभान चौधरी**

❖

सदस्यता शुल्क

संरक्षक	: 7100 रुपये
आजीवन	: 1500 रुपये (15 वर्ष के लिए)
पंचवार्षिक	: 700 रुपये
वार्षिक	: 150 रुपये
एक प्रति	: 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर

कार्यालय : **आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़**

जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

दूर. : 01276-230195 चल. : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com,
rajhansmaitreya@gmail.com

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
विविध समाचार	4
वेद सन्देश	6
सम्पादकीय : सभी दु:खों का मूल कारण अविद्या है।	7
अध्यात्म साधना	9
सृष्टि के आदि में मानव की उत्पत्ति कैसे हुई	11
सर्वगुण सम्पन्न श्री रामचन्द्र जी का जीवन-चरित्र	15
प्राणवायु की ऊर्जा से सबल	17
अर्थी व जनाजा	18
कैसे होता है प्राणायाम से पाप का नाश?	19
निश्रेयस-अभ्युदय की जननी प्राचीन भारतीय समाज	23
हंसो और हंसाओ	25
बने इन्सान तू	25
21वीं शताब्दी में संस्कृत का भविष्य	26
गोवंश हत्या के दुष्परिणाम एवं गोरक्षा के उपाय	28
कमल खिला है	30
प्रयाग और काशी-यात्रा दयानन्द के आलोक में	31
दान सूची	34

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

आत्मशुद्धि आश्रम का बृहद्-यज्ञ एवं ध्यान-योग विज्ञान शिविर सम्पन्न

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ में स्वामी धर्ममुनि जी के ब्रह्मत्व में 23जून से 29 जून 2014 तक बृहद् यज्ञ एवं निशुल्क: ध्यान योग शिविर श्रद्धा और उत्साह से सम्पन्न हुआ जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने लाभ उठाया।

बृहद्-यज्ञ एवं शिविर का उद्घाटन

23 जून सायं 4 बजे बृहद् यज्ञ और योग शिविर का उद्घाटन आश्रम के सहयोगी तथा शिविर के उद्घाटन कर्ता श्री डा. राजेन्द्र सिह सैनी आक्सफोर्ड स्कूल बहादुरगढ के कर कमलों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर हुआ। इस अवसर पर योगनिष्ठ सत्यपाल जी वत्स आर्य, श्री राजवीर जी आर्य स्वामी रामानन्द जी तथा ईशमुनि जी यज्ञ ब्रह्मा स्वामी धर्ममुनि मुख्याधिष्ठाता आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ के ब्रह्मत्व में आचार्य राजहंस जी मैत्रेय ने बृहद् यज्ञ कराया जिसमें वेदपाठ ब्रह्मचारी रवि शास्त्री और ब्र. जयपाल और उदयवीर द्वारा किया गया। स्वामीजी ने यजमानों का परिचय देते हुए सामूहिक रूप से आशीर्वाद दिलाया। इसके बाद ब्र. जयपाल संगीताचार्य लक्ष्मणानन्द जी और महात्मा विश्वमुनि जी ने सुमधुर भजन गाकर सभी को गद्गद् किया। इस अवसर पर स्वामी रामानन्द सरस्वती,श्री राजवीर जी आर्य एवं आचार्य राजहंस जी मैत्रेय ने प्रेरणादायक प्रभावशाली उद्बोधन दिया। बाद में संध्या के मंत्रो का पाठ किया गया। शान्ति पाठ के साथ योग शिविर का उद्घाटन सम्पन्न हुआ।

प्रतिदिन प्रात: 5 बजे से 6 बजे तक आचार्य राजहंस मैत्रेय जी ने ध्यान का प्रशिक्षण कुशलता के साथ कराया। 6 बजे से 7 बजे तक योगनिष्ठ सत्यपाल जी वत्स ने आसन प्राणायाम का अभ्यास कराया। मध्याह्नोपरान्त 4 बजे से 5.30 बजे तक स्वामी धर्ममुनि जी के ब्रह्मत्व में आचार्य राजहंस मैत्रेय बृहद् यज्ञ का आयोजन कराते रहे। जिसमें पुरुषार्थ मुनि, श्री अनिल जी मलिक सपत्नीक ,कर्नल राजेन्दजी सहरावत, श्रीमती सरला खरबन्दा, श्री अंगूरी देवी धमपत्नी श्री रणवीर सिंह, श्री मुकेश खरवन्दा, श्रीमती शोभा महेन्द्रू, एडवोकेट राजेश गुप्ता श्री रामदेवजी श्री दर्शन अबरोल श्रीमती विद्यावती, श्री मनुदेव वानप्रस्थी श्रीमती सपना, माता वेदकौर आदि यजमान बनते रहे। 11 बजे से 12.30 बजे तक योग दर्शन का स्वाध्याय और शंका समाधान का कार्यक्रम आचार्य राजहंस जी मैत्रेय के सानिध्य में प्रभावशाली ढंग से चलता रहा। इस अवसर पर ब्र. जयपाल, उदयवीर, आदि के सुन्दर भजनों का कार्यक्रम रहा। आर्य तपस्वी सुखदेव जी दिल्ली, स्वामी रामानन्दजी, आचार्य रवि शास्त्री, आचार्य राजहंस मैत्रेय जी आचार्य खुशीराम जी आदि विद्वानों के प्रात: सायं प्रभावशाली व्याखान होते रहे।

बृहद् यज्ञ की पूर्णाहुति, योग शिविर समापन समारोह

आश्रम में पिछले 23 जून से चल रहे बृहद्यज्ञ और योग साधना शिविर का समापन समारोह 29 जून को उत्साह और हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हो गया। सैकड़ो साधकों ने शारीरिक और आध्यात्मिक लाभ उठाया। स्वामी धर्ममुनि जी के निर्देशन में आचार्य राजहंस जी मैत्रेय ने बृहद् यज्ञ की पूर्णाहुति करायी। वेदपाठ ब्र. उदयवीर और ब्र. जयपाल द्वारा किया गया। मुख्य यजमान श्री कन्हैयालाल जी आर्य सपत्नीक गुड़गांव उपप्रधान आश्रम ट्रस्ट रहे। यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद स्वामीजी ने यजमानों का परिचय देते हुए सामूहिक रूप से आशीर्वाद दिलाया। शिविर समापन समारोह के अध्यक्ष आश्रम ट्रस्ट के प्रधान श्री सत्यानन्द जी आर्य रहे। वान. विश्वमुनि जी, श्रीमति चन्द्रकला जी , पं. रमेश जी, श्री लक्ष्मणानन्द जी आदि ने सुन्दर भजनों का कार्यक्रम रखा। इसके बाद योगशिविर अध्यक्ष आचार्य राजहंस जी मैत्रेय, आर्य तपस्वी सुखदेव जी दिल्ली, आचार्य सत्यपाल जी फर्रुखनगर, शिव स्वामी, प्राचार्य आजाद सिहं दूहन, योगनिष्ठ सत्यपाल जी वत्स आदि विद्वानों ने योग ध्यान, ईश्वर भक्ति, विषयक ओजस्वी, प्रेरणादायक व्याख्यान दिये। इस अवसर पर वानप्रस्थी पुरुषार्थ मुनि जी ने एक पुस्तक का विमोचन उपस्थित विद्वानों और संन्यासियों के कर कमलों द्वारा कराया। स्वामी धर्ममुनि जी मुख्याधिष्ठाता आश्रम ने सभी को शुभाशीष देते हुए आगामी कार्यक्रमों की सूचना दी और आश्रम द्वारा संचालित विविध सेवा कार्यो का परिचय देते हुए सभी संन्यासियों, विद्वानों, दानियों, कार्यकर्ताओं और साधक साधिकाओं का हार्दिक धन्यवाद किया। मंच संचालन का कार्य श्री कन्हैयालाल जी आर्य ने बड़ी कुशलता के साथ किया। कार्यक्रम के संयोजक वानप्रस्थी ईशमुनि रहे। भोजन तथा अन्य व्यवस्था विक्रम देव शास्त्री व ब्र कर्ण द्वारा सुन्दर ढंग से की गयी।

श्री कन्हैया लाल आर्य को अध्यात्म रत्न

पं. राम प्रसाद बिस्मिल जी की पावन जयन्ती के शुभ अवसर पर स्वास्ति महायज्ञ, विराट भजन सन्ध्या एवं सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया गया। यह आयोजन देहली की सभी आर्य समाजों की ओर से बी-ब्लॉक जनकपुरी में किया गया। इस समारोह में मुख्य अतिथि दिल्ली सरकार के पूर्व मन्त्री एवं विधायक श्री जगदीश मुखी, दिल्ली नगर निगम के महापौर भी खुशी राम एवं मुख्य वक्ता भावनगर (गुजरात) विश्वविद्यालय के प्रो. डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया थे। कार्यक्रम का संयोजन अर्न्तराष्ट्रीय वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर ने किया। सभी वक्ताओं ने पं. राम प्रसाद बिस्मिल के अभूतपूर्व त्याग, बलिदान एवं देशभक्ति की भावना को स्मरण किया। इस अवसर पर गुड़गांव

निवासी कन्हैया लाल आर्य जी को उनकी अध्यात्म एवं समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए 'अध्यात्म रत्न' से विभूषित किया गया। अध्यात्म पथ परिवार श्री आर्य जी को सम्मानित कर गौरवान्वित है।

फर्रूखनगर आश्रम का यज्ञ व मासिक सत्संग

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रूखनगर गुड़गांव का यज्ञ व मासिक सत्संग दिनांक 14 जून सायं 4 बजे उत्साह और उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

स्वामी धर्ममुनि जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य राजहंस मैत्रेय वानप्रस्थी ईश्वर मुनि वानप्रस्थी, विश्वमुनि, श्री आचार्य सत्यपाल जी अन्य विद्वत जन और क्षेत्र के प्रतिष्ठित लोग थे। इस अवसर पर गुरुकुल की उन्नति तथा छात्रों के दाखिले के सम्बन्ध में एक सभा का आयोजन भी किया गया। जिसमें सभी ने अपने विचार प्रकट किये। इस मौके पर ललित कुमार सुपुत्र श्री रमेशचन्द्र जी सिद्धिपुरा, दिल्ली ने गुरुकुल को12 पंखे भी प्रदान किये। जिन्हें पटका एवं स्मृति चिन्ह् देकर सम्मानित किया गया। शान्तिपाठ के बाद कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

आत्मबोध मानव जीवन को आन्तरिक रूप से ही नहीं अपितु बाह्य रूप से भी सौन्दर्यपूर्ण बनाता है और मानव जीवन का अन्तिम गौरव प्रकट होता है।

–राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

विवाह पर आजीवन सदस्य बने

श्री कन्हैया लाल आर्य उपप्रधान आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ एवं फर्रुखनगर के भतीजे श्री लव कुमार पहूजा सुपुत्र श्री राकेश कुमार पहूजा एवं श्रीमती सरोज पहूजा, सुभाष नगर गुड़गांव (हरियाणा) का शुभ विवाह कुमारी इन्दु सुपुत्री श्री रतन लाल शर्मा एवं श्रीमती सुदेश शर्मा, सुन्दर बनी जम्मू (कश्मीर) के साथ उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। आत्मशुद्धि पथ मासिक पत्रिका के आजीवन सदस्य बने। आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ (झज्जर) एवं अखरोम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रूखनगर (गुड़गांव) प्रिय राकेश एवं इन्दु के सुखद जीवन की मंगल कामना करते है।

ब्रह्मचर्य महिमा!

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार

इयं समित् पृथिवी द्यौर्द्वितीयोतान्तरिक्षं समिधा पृणाति।
ब्रह्मचारी समिधा मेखलया श्रमेण लोकाँस्तपसा पिपर्त्ति॥

- अथर्व. 11.5.4

ऋषि:- **ब्रह्मा**।। देवता-**ब्रह्मचारी**।। छन्द:-**त्रिष्टुप**॥

शब्दार्थ-इयं समित्=यह पहली समिधा **पृथिवी**=पार्थिव-जगत् की, **द्वितीय**=दूसरी समिधा **द्यौ:**=घुलोक की, आत्मिक जगत् की, **उत**=और वह **समिधा**=अपनी तीसरी समिधा द्वारा **अन्तरिक्षम्**=मध्य के मनोमय अन्तरिक्ष लोक को **पृणाति**=पूर्ण करता है। इस प्रकार **ब्रह्मचारी**=ब्रह्मचारी **समिधा**=समिधा से, त्रिविध दीप्ति से **मेखलया**=मेखला से, कटिबद्धता से **श्रमेण**=श्रम से और **तपसा**=तप से **लोकान्**=तीनों लोकों को, संसार के सब लोगों को **पिपर्ति**=पालित, पोषित और पूरित करता है।

विनय- यह संसार ब्रह्मचर्य से ही पालित, पोषित और पूरित हो रहा है। इस जगत् के आधार में यदि ब्रह्मचर्य का परमवीर्य न होता, तो यह जगत् कब का खत्म, खाली और छूछा हो चुका होता, अपने शारीरिक वीर्य की, ब्रह्मतेज की और आत्मिक वीर्य (आत्म-तेज) की रक्षा करनेवाले संयमी ब्रह्मचारी लोग ही हैं जो इस त्रिलोकी को निरन्तर जीवन-तेज से पूरित कर रहे हैं। ब्रह्मचारी अपने शरीर को, अपने मन को, अपनी आत्मा (विज्ञानमय) को तीन समिधाएँ बनाकर बृहद अग्नि (आचार्याग्नि या परमात्माग्नि) में रखता है, उसके अर्पण कर देता है। इसका फल यह होता है कि उसकी ये तीनों समिधाएँ प्रदीप्त हो जाती हैं-उसके शरीर में वीर्य का तेज आ जाता है, उसका मन ब्रह्म-तेज से समिद्ध हो जाता है और उसका आत्मा आत्मतेज से सूर्यवत् जाज्वल्यमान, प्रकाशित हो जाता है। शरीर की समिधा से वह स्थूल पृथिवीलोक को तृप्त और परिपूर्ण करता है, मन की दीप्ति से अन्तरिक्षलोक को पूरित करता है और आत्मप्रकाश से द्युलोक को। इस प्रकार से संसार का प्रत्येक सच्चा ब्रह्मचारी अपने इस संचित, रक्षित, त्रिविध तेज (समिधा) द्वारा इन तीनों लोकों को पालित कर रहा है। मेखला का अर्थ है सदा कटिबद्ध, मुस्तैद, तैयार, सावधान रहना, आलस्य, खाली रहने की इच्छा, शिथिलता, प्रमाद ब्रह्मचारी के घोर शत्रु हैं। इसी प्रकार खूब श्रम करना, शरीर और मन से खूब काम लेकर इन्हें थका देने पर ही विश्राम ग्रहण करना-यह ब्रह्मचारी का धर्म है, आराम-पसन्त, कामचोर, मनुष्य के भाग्य में ब्रह्मचर्य का सुख नहीं है। तप करना, सब द्वन्द्वों का सहना, गर्मी-सर्दी, भूख-प्यास, सुख-दु:ख आदि को प्रसन्नतापूर्वक सहना-यह ब्रह्मचारी का तीसरा परमावश्यक व्रत है। कटिबद्धता, श्रम और तप के पालन द्वारा ही ब्रह्मचारी में त्रिविध तेज का (वीर्य का) रक्षण और संचय होता है और इन्हीं तीन के लगातार अनुष्ठान द्वारा ही ब्रह्मचारी अपने इस तेज का उपयोग करता हुआ लोकों का (त्रिविध संसार का, संसार के लोगों का) पालन-पोषण और पूरण करता है। इन्हीं में ब्रह्मचर्य की अपार महिमा का रहस्य है।

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम ''दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर''। रेल-बस आदि की चौबीस घण्टे सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, दूरभाष: 01276-230195 चलभाष: 9416054195

सम्पादकीय — सभी दु:खों का मूल कारण अविद्या है।

मानव जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त दु:खों से घिरा रहता है और सम्पूर्ण जीवन उनसे छूटने का यत्न करता है फिर भी अविद्यारूपी शक्ति के आगे वह हारता हुआ दिखाई देता है अविद्या सभी क्लेशों की जननी है, इसे पतंजलि ने योगदर्शन में सुन्दर ढंग से वर्णन किया है अब उसके स्वरूप की चर्चा करते हैं।

अनित्याशुचिदु:खानात्मसुनित्यशुचिसुखात्मख्यातिरविद्या ॥ 5 ॥ पदार्थ:–अनित्य अशुचि-दु:ख-अनात्मसु=अनित्य, अपवित्र, दुख और अनात्मा में क्रमश: **नित्य शुचि सुख आत्मख्याति:**=नित्य पवित्र सुख और आत्मभाव अर्थात् चेतनता का ज्ञान **अविद्या**=अविद्या है। अर्थात् जिसका जो धर्म नहीं है उसमें उसका दिखाई देना अविद्या है। अविद्या एक ऐसा भाव पदार्थ है जो हमें भ्रमित करता है। अर्थात् अनित्य में नित्य, अपवित्रता में पवित्रता, दु:ख में सुख और अनात्मा में आत्मा दिखाता है। और जब तक चित्त में अविद्या रहती है, तब तक व्यक्ति दु:खों से छुटकारा नहीं पा सकता। प्राय: अविद्या का अर्थ ज्ञान का अभाव लिया जाता है और यह समझा जाता है कि जितनी विद्या प्राप्त करेंगे उतने ही अज्ञान को दूर कर ज्ञानी हो जायेंगे, जो नहीं जानते उसे जान लेंगे और मुक्त हो जायेंगे। सच यह है कि अविद्या का अर्थ है विवेक का अभाव। विवेक जितनी सघनता में बढ़ेगा उतनी ही विरलता में अविद्या का अभाव होगा और जितनी मात्रा में अविद्या का अभाव होगा, उतनी ही मात्रा में जीवन के सत्य प्रकट होने प्रारम्भ हो जायेंगे और जितने सत्य प्रकट होंगे, उतने ही मन, शरीर और जगत से बंधन कटने प्रारम्भ हो जायेंगे और अन्तत: व्यक्ति अविद्या के अभाव में पूर्णतया मुक्त हो जायेगा।

साधारणतया जो ज्ञान प्राप्त किया जाता है, वह तो दूसरों के द्वारा बताया हुआ होता है। वह तो केवल स्मृति ज्ञान होता है। वह तो अन्य माध्यमों से उपार्जित है। यह अविद्या को दूर कर देगा, यह सुनिश्चित नहीं है। किन्हीं अर्थों में सहयोगी हो सकता है। वह भी सहयोग लेने वाले पर निर्भर करता है। कुछ साधक इसी उपार्जित ज्ञान का सहयोग लेकर अविद्या का नाश कर मुक्त हो जाते हैं। कुछ लोग उसी उपार्जित ज्ञान को भरकर और अहंकार को भर लेते हैं और आत्मज्ञान से वंचित हो जाते हैं। इसलिए गुरु सत्संग, शास्त्राध्ययन से आत्मा की जागरूकता (विवेक ख्याति) बढ़ती है तो अविद्या का नाश हो सकता है। यदि गुरु, स्वाध्याय, सत्संग आदि में विवेक-जागरूकता पैदा नहीं होती तो वह ज्ञान, लोक व्यवहार में तो काम आ सकता है परन्तु विषम परिस्थिति आने पर वह दुखों से नहीं बचा सकता। इसलिए हमें स्वयं को जानने के लिए अग्रसर होना है। जैसे ही हम स्वयं को जानने का प्रयास करेंगे, तो अविद्या से युक्त अनेक प्रकार के विचार चलते हुए दिखाई देंगे। विचार दृश्य है क्योंकि वह दिखाई देता है। जानने वाला या देखने वाला द्रष्टा है। क्योंकि उसे दिखाई देता है। जिसे दिखाई देता है वह सनातन है। अर्थात् वह सदैव रहता है। क्योंकि दृश्य दिखाई देता है या नहीं, इन दोनों स्थितियों में देखने वाला सदैव रहता है। यदि देखने वाला न हो तो किसी को कुछ भी दिखाई नहीं देगा। इसलिए देखने वाला आत्मा है। जो सनातन शाश्वत है। देखने वाला आत्मा जितनी समग्रता, जागरूकता और तटस्थ होकर स्वयं के प्रवाहशील अस्त व्यस्त विचारों को देखेगा तो पायेगा कि विचारों का प्रवाह धीरे-धीरे क्षीण होने लगा और निरन्तर विचारों के देखने पर कुछ समयान्तराल में विचार शून्य हो जायेंगे। उस विचारशून्यता में जो दिखाई देता है, वही सत्य होता है। इसलिए जागरूकता ही इस अविद्या का नाश करती है। अन्यथा जागरूकता के अभाव में अविद्या बनी रहती है। वही अविद्या हमें भटकाती है। इसी की उपस्थिति में अनेक क्लेश चित्त में बने रहते हैं। और जब तक चित्त में क्लेशों की भूमिका है, तब तक दुनिया में दु:खों से कोई छुटकारा नहीं दिला सकता। हमें दुखों के पार होना है तो आत्मा को जागरूक बनाने के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं है। अन्य माध्यमों से उपार्जित ज्ञान अविद्या का नाशक नहीं होता इसलिए हजारों विद्याधर सामान्य लोगों की भांति ही दुखी और भ्रमित देखे जाते हैं। यदि दु:खों से छुटकारा पाना है

तो चित्त में उपस्थित अविद्या को किसी भी अनुकूल उपाय से क्षीण करना है और उसके नाश के लिए जो सतत प्रयासरत हैं वही सच्चे साधक व योगी हैं।

हम प्रायः अविद्या का अर्थ विद्या का न होना समझते हैं। इसी से ऐसा भी प्रतीत होता है कि हम जितनी विद्या प्राप्त करेंगे, उतनी ही अविद्या का नाश कर लेंगे इसलिए अविद्या के नाश के लिए हम विद्या प्राप्ति में लगे रहते हैं। वस्तुतः विद्या प्राप्त करने पर भी अविद्या उसी मात्रा में बनी रहती है। इसी अवस्था में हजारों विद्वानों और संन्यस्त महानुभावों को देखा जा सकता है। इससे स्पष्ट होता है कि अविद्या विद्या का अभाव नहीं है। अपितु विद्या के विपरीत एक भाव पदार्थ है जो व्यक्ति को अनित्य में नित्य, अपवित्रता में पवित्रता, अनात्मा में आत्मा और दुःख में सुख दिखाता है। यह ध्यान देने योग्य है कि आत्मा, परमात्मा, शरीर, मन आदि की जानकारी मात्र से अविद्या दूर नहीं होती। बहुत लोग आध्यात्मिक क्षेत्र में बड़े ही विद्यावान हैं। परन्तु अविद्या से अपना पीछा नहीं छुड़ा पाते हैं। हमें विद्याप्राप्ति के साथ-साथ उन उपायों को भी अपनाना होगा जो अविद्या को दूर करते हैं। यदि विद्या अर्जन में ही रहें तो कई आयामों में तो अविद्या और सघन हो जाती है इसलिए विद्या अर्जन विवेक जागरण में सहयोगी होना चाहिए अन्यथा व्यक्ति विद्याजाल में ही उलझकर रह जाता है। अविद्या को दूर करने का एकमात्र उपाय है विवेक जागरण। विवेक जितना जागता है उतनी अविद्या दूर होती है। यदि विवेक नहीं जागता तो विद्या और अविद्या का ही पोषण करती है। इसलिए विवेक जागरण मूल बात है। विवेक जागरण का अर्थ है कि आत्मा बुद्धि वृत्तियों को ही तटस्थ होकर देखती है। जब आत्मा बुद्धि (चित्त) वृत्तियों को ही दृश्य बना लेती है तो बुद्धि वृत्तियां आत्मा पर हावी नहीं होतीं। आत्मा केवल द्रष्टा बन जाता है। इसलिए आत्मा सभी वृत्तियों से पृथक् स्वतन्त्र वृत्तियों की अधीनता से रहित आनन्द भोगता है। अतः विवेक जागरण ही अविद्या का नाशक है। विवेक ख्याति जो अविद्या की नाशक है और अविद्या से उत्पन्न सभी क्लेशों को दग्ध कर देन`वाली है जो क्लेशों या दुःखों को उत्पन्न करने अथवा फल देने में असमर्थ कर देती है ठीक ही कहा गया है–

बीजान्यग्न्युप दग्धानि न रोहन्ति यथा पुनः।
ज्ञानदग्धैस्तथा क्लेशैर्नात्मना सम्पद्यते पुनः॥

जिस तरह अग्नि में जले हुए बीज फिर नहीं उगते हैं, उसी प्रकार विवेक ज्ञानरूप अग्नि से जले हुए क्लेश फिर उत्पन्न नहीं होते। **-राजहंस मैत्रेय**

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं–

1. **आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।**
2. **बाल कल्याण सदन के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।**
3. **बाल कल्याण सदन के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।**
4. **आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 2500/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं।**

कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें।

धन्यवाद! –व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 01276-230195, 9416054195

अध्यात्म साधना

– अशोक कुमार शास्त्री

जैसे मदारी रीछ बन्दरों को, सपेरे सांप को, कोचवान घोड़ो को प्रशिक्षक, कुत्ते बैल आदि जानवरों को प्रशिक्षण देकर मनुष्यों जैसा हितकारी उपयोगी व्यवहार सिखा देते हैं। वैसे इन जानवरों में सूझ-बूझ की अत्यन्त कमी होती है। तो क्या कारण है कि अपार बौद्धिक क्षमता के रहते हुए मनुष्य दीन हीन एवं दुखी बना रहे। यदि प्रयत्न किया जाए तो प्रत्येक व्यक्ति अपना जीवन महामानवों सा बना सकता है। हर व्यक्ति के अन्दर बीज रूप में महान बनने की सम्भावना छिपी रहती है। उसे केवल प्रकाशित करने भर की देर है। रत्नाकर जो पश्चात वाल्मीकि बने। अंगुलीमाल बौद्ध भिक्षु हो गए। मूलशंकर स्वामी दयानन्द सरस्वती हुए। स्वामी श्रद्धानन्द सन्त तुलसीदास आदि महापुरुष पश्चात जैसे बने पूर्व में वैसे न थे। उनका यह जीवन परिवर्तन आत्म शिक्षण अभ्यास तथा अध्यात्म साधना से सम्भव हो सका। जैसे पहने हुए कपड़े धूल आदि जमने से शनैः-शनैः मलिन तथा रोग कर हो जाते है। प्रसन्नता देने में भी असमर्थ हो जाते हैं। वैसे ही जो लोग जीवन रूपी वस्त्र की सफाई नहीं करते उनकी पाप पंक में गिरने की संभावना अधिक हो जाती है। पाप प्रथम आकर्षक लगता है फिर हठी एवं ढीठ की तरह साथ लग जाता है। अन्ततः सर्वनाश करके ही साथ छोड़ता है। इसके विपरीत अध्यात्म साधना जिसे हम प्रशिक्षण एवं अभ्यास भी कह सकते है से जीवन सौन्दर्य निखरकर पूर्णता प्राप्त होती है। भगवान कृष्ण के दिए गए उपदेश रूप प्रशिक्षण से निराश एवं हताश अर्जुन कह उठे-**(नष्टो मोहः स्मृर्ति लब्धा त्वद् प्रसादात् महेश्वरः। करिष्ये वचनं तव।)**

मेरा मोह नष्ट हो गया है। जीवन के यथार्थ सत्य का अनुभव हुआ। मैं आपके वचनों का पालन करूंगा। स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के दिए गए प्रशिक्षण से नास्तिक गुरुदत्त आस्तिक शिरोमणि हो गए। साधक जीवन को ईश्वर प्रदत्त अमूल्य सम्पदा के रूप में स्वीकार करता है। शास्त्रों के अनुसार चराचर भूतों का रस पृथ्वी है। पृथ्वी का जल, जल की औषधियें तथा औषधियों का सार पुरुष है। पुरुष ही संसार में सर्वश्रेष्ठ है। वह सृष्टि को भोक्ता है। विद्वान सृष्टि का अपने अनुसार बनाता और संचालित करता है। मूर्ख संसार और समाज को ढोता रहता है। इसी लिए संस्कृति में विद्वान को विचाश्चित कहते हैं। जो संसार पर सवारी करता है। वह दास नहीं स्वामी बनता है। शारीरिक आत्मिक भौतिक उन्नति देने वाली विद्या का उपयोग कर लौकिक और पार लौकिक सम्पदाएं प्राप्त करता है। वह न तो दीन हीन जीवन जीता है और न ही पशु तुल्य। साधक कलात्मक जीवन जीते हैं। अपने दोषों का शोधन तथा सद्गुण सद्वृति जागरण कर अपार क्षमताओं का विकास कर श्रेष्ठतम लक्ष्य प्राप्त करते हैं। साधक अपने आपको ऐसे सांचे में ढालता है जिसमें से वह देवपुरुषों जैसा शक्ति सम्पन्न सक्ष्म तथा आकर्षक बनके निकलता है और यह साबित कर देता है कि पृथ्वी की सम्पदाएं और सुख देवताओं के लिए हैं साधक उनका सदपयोग कर सुख पाता है। जबकि असाधक साधनों और अपने जीवन का दुरुपयोग का दुःख पाता है। आपने कभी यह कथानक सुना ही होगा कि समुद्र मंथन के समय अमृत और सुरा दोनों निकले। देवताओं ने अमृत का वरण किया और अमर हो गए । राक्षसों ने सुरा को स्वीकार किया। सुरा बुद्धि और विवेक खो देती है। फिर सुख सौन्दर्य जीवन में कहां से रहेंगे।

यही देवों दानवों का अन्तर है। अध्यात्म साधना से विश्व को देवभूमि बनाया जा सकता है। संसार रूप दुःख सागर को सुख सागर में बदला जा सकता है। श्री भर्तरि हरि का कथन अति उत्तम है-''**कौपीन वन्तः खलुभाग्यवन्तः** लगोंटधारी (संयमी साधक ही भाग्यशाली है तथा सुखी है। इसी को जगत्गुरु शंकाराचार्य महाराज अधिक स्पष्ट करते हैं। ''**शेते सुखं कस्तु यः समाधिनिष्ठो,** साधना निरत समाधिलीन ही सर्व सुखी है। अध्यात्म का उद्देश्य व्यक्ति में सम्वेदनशीलता निस्वार्थ भावना सहयोग की प्रवृति तथा परोपकारशीलता को बढ़ाता है। शारीरिक भावनात्मक तथा बौद्धिक पूर्णता लानी है। भौतिक और आध्यात्मिक जरूरतों के बीच सन्तुलन पैदा करना है। जीवन की अपूर्ण इच्छाओं को शान्त कर समझौते की प्रवृत्ति को बढ़ाना है। ताकि सभी को तनावमुक्त होकर जीने का अवसर मिले। जैसा आज सभी जानते हैं कि चिकित्सकों की राय में तनाव रोककर तथा बुद्धिहरण कर्ता है यह जीवन को निरानन्द बना देता है। जैसा आज कल सर्वत्र देखा जा सकता है। शायद इसलिए फिर से योग और ध्यान साधनाओं में लोगों की रूचि बढ़ी है। कठिनाई और कष्ट में लोग इनकी तरफ देख रहें हैं। इन्हीं

साधनाओं से योगी ध्यानी भक्त अधिक सुखी जीवन जीते थे, पूर्ण आयु प्राप्त थे। पूर्ण सुख और सन्तुष्टि प्राप्त थे। पूर्णकाम थे। आप भी ऐसे हो सकते है। देर इन्हीं साधनाओं को जीवन में उतारने मात्र की है फिर देखिये सांसारिक सम्पन्नता का ग्राफ ऊंचा होते हुए भी जो सन्तुष्टि और सुख का ग्राफ नीचे गिरा है किस तरह ऊंचा होता जाएगा। कम से कम साधनों में अधिक से अधिक सन्तुष्टि और सुख देना अध्यात्म साधना की विशेषता है। यथोचित ज्ञान एवं आत्म नियंत्रण से दुःखों से बचा जा सकता है सुखों की प्राप्ति सरल हो जाती है। सभी विषमताओं को अध्यात्म के जरिए दूर किया जा सकता है।

एक सुसभ्य सुसंस्कृत व्यक्तित्व तथा समाज का निर्माण कर आदर्श एवं श्रेष्ठ विश्व निर्माण की दिशा में कदम बढ़ायें जा सकते है। गरीबी बेरोजगारी, रोग, शोक, कलह, अशान्ति भय दूर किये जा सकते हैं। रूपये, पैसे, मान, प्रतिष्ठा, स्वार्थ में पागल हुए, जनों को यह समझना चाहिए कि आर्थिक गरीबी गरीबी नहीं है। साधना के सुपथ पर चलते चलते सभी समस्याओं का समाधान संभव है। साधन एवं मानवीय मूल्यविहीन व्यक्ति और समाज के बड़े-बड़े आर्थिक महल ढह जाएंगे। चहुँ ओर अशान्ति और दुःख का साम्राज्य दिखाई देगा। साधक विशेष दृष्टि बनाता है। सृष्टि को बनाने का काम भगवान पर छोड़ता है। ''माता भूमिः पुत्रोंऽह पृथिव्याः'' वेद वाक्य को स्मरण कर सोचता है। धरती हमारी माता है और हम उसके पुत्र है। धरती पर निवास करने वाले सभी मेरे भाई बहन एवं आत्मीय जन है। इस अनुभव से अनेक विविधताओं के रहते हुए भी मतैक्यता और सौहार्द बढ़ा लेता है। उसके शत्रुओं की संख्या शून्य हो जाती है ''मित्रस्याहं सर्वाणि भूतानि समीक्षे, सभी प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखता है। साधक अपनी मित्रता अर्थात् सुख का दायरा विस्तृत कर लेता है। अकारण किसी को न तो भय देता है और न ही किसी से भय खाता है। मन में संकल्प रखता है। **''मत्तः सर्वभूतेभ्योऽमयमस्तुः''** मुझसे प्रति प्राणी अभय हों। सबका प्रिय बन जाता है। भक्त जानता है भय देने वाला घृणास्पद होता है भयदाता कभी प्रेमपात्र नहीं बन सकता है। साधक की सोच विश्व को एक घोसले की तरह बनाने की होगी। जिसमें सभी प्राणी पक्षियों की तरह सुख से रहें। धरती सबके सुख का आश्रयस्थल बने। सभी दुःख एवं व्यसन मुक्त हों। सर्वे भवन्तु सुखिनः'' अध्यात्म साधना का अन्तिम लक्ष्य है। इस प्रसंग में ऋषि भावनाओं को उद्धृत करना चाहता हू जो एक वेद मन्त्र का अर्थ है आकाश शान्त हो पृथ्वी शान्त हो औषधियां, वनस्पतियां अग्नि, वायु, जल, सूर्य आदि देवता मनुष्यों पर सुख वर्षोवें। सभी को योगक्षेम वहन करें। हमारी सद्भावना और प्रयत्न सभी के सुख के लिए है।

1. मानवता के शत्रु अज्ञान और स्वार्थः यह दोनों सामाजिक रिश्तों को समाप्त कर देतें हैं। अज्ञान, स्वार्थ, वैमनस्य, द्वेष आदि मनुष्य और समाज दोनों के हित में नहीं है। इन सब का परित्याग करें। संसार के सारे पदार्थ परोपकार करते हैं। चाहे सूर्य हो चन्द्रमा हो मेघ हो। ये पशु पक्षी सभी उपकार कर रहें हैं। क्या वायु आपको जीवनदायी शक्ति प्राण नहीं दे रहा है? सूर्य देखने की शक्ति। अन्य पदार्थ आपको जीवनोपयोगी सामान। ये पदार्थ स्वार्थी नहीं तब आप क्यों स्वार्थी हैं। विचारें। उस पर परमज्ञानी ''ज्ञान सर्वस्व, परमपिता को जानने में हमारी शक्ति और समय लगना चाहिए। व्यर्थ में नहीं। अज्ञान, अन्याय, अभाव को साधकों के द्वारा विद्वान, बलवान, आत्मवान, बनके दूर किया जा सकता है। साधक संसार के सभी प्रकार दैहिक, दैविक, भौतिक तापों से मुक्ति मिल जाती है।

2. प्रार्थना से परमात्म प्राप्तिः प्रार्थना से अनेक दिशाओं में बहकने वाला मन एक केन्द्र पर एकाग्र हो जाता है। चित्त की समग्र भावनाओं को उस केन्द्र में एकत्र कर चित्त को दृढ़ करने की प्रणाली का नाम प्रार्थना है। जिसे दर्शन शास्त्र योग का नाम देते है। **(योगश्चित्त वृति निरोधः)** चित्त वृत्तियों के निरोध का नाम योग है। यही प्रार्थना की पहली सीढ़ी है। सांसारिक व्यतिक्रम एवं प्रवंचना से क्लान्त होने पर विवश जनों के लिए प्रार्थना ही सम्बल बनती है। प्रार्थना पारसमणि है जो प्रार्थी को प्रकाशित कर देती है। यह व्यक्ति के जन्म जन्मान्तरों से संचित शुभ संस्कारों से प्राप्त होती है। प्रार्थना प्रार्थी को सावधान और अभय बना देती है। प्रार्थना में साधक का परमात्मा से संभाषण होता है। श्रद्धा शरणागति आत्म समर्पण प्रार्थना का पूर्णत्व प्रदान करते हैं। परमात्मा गुणाराधन से महानता प्राप्त होती है। अहंकार पाप दुःख समाप्त करने का उपाय प्रार्थना ही है। इससे हमारे मनोविकार शुद्ध एवं परिष्कृत होकर हम शुद्ध बुद्ध हो जाते है। तुलसी, मीरा, चैतन्य महाप्रभु आदि प्रार्थना से ही महापुरुष हो गए। **क्रमशः......**

सृष्टि के आदि में मानव की उत्पत्ति कैसे हुई

- हरिशचन्द्र वर्मा 'वैदिक'

इस आदि मानव उत्पत्ति के सम्बन्ध मेजिन-जिन लोगों ने अपना-अपना मत-व्यक्त किया है, उन सबके अनुमान और अनुभव को देखते हुए मुझे यही कहना है कि यह किसी को ठीक पता नहीं है और न किसी ने देखा है कि आदि में मानव की उपत्पत्ति कैसे हुई। इस सम्बन्ध में डार्विन विकासवाद के अनुसार मानव की उत्पति तो बिल्कुल ही असत्य है। (देखिये वैदिक सम्पत्ति में)।

'प्रोफेसर थामसन ने लिखा है कि हम नहीं जानते कि मनुष्य कहां से निकल आया, या कैसे उत्पन्न हो गया। यह बात खुले तौर से स्वीकार की जाती है कि मनुष्य की उत्पत्ति जिस प्रकार विकासवाद में बतलाई जाती है, वह प्रकार सम्भावना की सीमा से सीमित है, परन्तु उसका कोई स्थिर स्थान विज्ञान की सीमा में नहीं है।'

बन्दर अथवा वनमानुष से मनुष्य की उत्पत्ति नहीं हुई क्योंकि वे दोनों पशुओं में गिने जाते हैं। पशुओं के दूध के दांत नहीं गिरते, वे जल में तैरेन लगते हैं, किन्तु मानव उनसे पृथक है। मानव बालक के दूध के दांत गिरकर पुनः नये दांत उतपन्न होते हैं, जो उसके जीवन भर रहते हैं, और मानव को जल में डालने से वह डूबने लगता है, जबकि पशु नहीं डूबते तैरने लगते हैं। मानव बिना सिखाये जल में तैर नहीं सकता। बन्दर और वनमानुष आज भी हैं, किन्तु उनसे मनुष्य बनते आज तक किसी ने नहीं देखा, उनके बच्चे भी उन्हीं जैसे होते हैं।

सृष्टि में जिन जीवों से दूसरे जीव बन जाते हैं वे आदि से लेकर आजतक वैसे ही बनते आ रहे हैं। जैसे तितलियां जब वनस्पतियों के पत्तों पर अण्डे दे देती हैं, तब कुछ दिनों में उन अंडो से सूँडी कीड़ा लोमयुक्त उत्पन्न हो जाते हैं, फिर वे रेंगते-रेंगते रूक जाते हैं, कुछ दिनों उनके एक-एक पोर से तितलियां उत्पन्न होकर उड़ने लगती हैं, कुदरत ने इनकी उत्पत्ति वनस्पतियों के फूलों में बीज की उत्पत्ति के लिए की है। उद्‌भिज फूल के पुंकेसर में रेणू की और स्त्री केसर में अण्ड की सृष्टि होती है रेणु का अण्ड तितलियों के पैरों में लग जाते हैं और उनके इस फूल से उस फूल में बैठने से रेणु का अण्ड के साथ संयोग हो जाता है, तब बीज की उत्पत्ति होने लगती है। वृक्षों के फूलों के पराग का भी वायु के प्रवाह से विनिमय होता रहता है। विधाता द्वारा जितनी वनस्पतियाँ और प्राणियों की उत्पत्ति हुई है कोई भी निरर्थक नहीं है।

किसी भी प्राणी का जन्म जिस नियम से होता है आदि से आज पर्यन्त उसी नियम से होता आ रहा है, जैसे मकड़ी, छिपकली, हाथी, घोड़ा, गौ, सूअर, सिंह, बन्दर, जिपांजी=बनमानुष आदि। कोई भी पशु एक दूसरे प्राणी से विकसित होकर नहीं बना, जो जैसा है वह वैसा ही उत्पन्न हुआ और होता है। हां-बीज आम से कलामी आम बनता अवश्य है, पर 3-4 पीढ़ी के बाद वह तुख्मी जैसा होने लगता है, वैसे ही कुत्ते की जातियों में भी होता है।

किसी एक वृक्ष का दूसरे वृक्ष में रूपान्तर आजतक नहीं हुआ, नीम का पेड़ पीपल बनाने से नहीं बन सकता।

जल, स्थल और वायु में उड़ने वाले प्राणियों की उत्पत्ति उनके पूर्व संस्कार के द्वारा हुई और होती है। उस सर्वज्ञ ने जीवन उपयोगी पंचतत्वों के पश्चात् पहिले योग्य पदार्थो वनस्पतियों की उत्पत्ति की उसके बाद भोक्ता प्राणियों की। किन्तु सृष्टि के आदि में सर्वप्रथम छोटे जीवों की उसके बाद पशुओं की उसके बाद मनुष्यों की उत्पत्ति हुई जो एक रहस्य बना हुआ है, किन्तु किसी एक प्राणी से सभी प्राणी उत्पन्न नहीं हुए। हम पहिले लिख आये हैं कि पहिले भोग्य उसके बाद भोक्ता की उत्पत्ति हुई। इसका प्रमाण यह है कि जब माता के गर्भ में बच्चा आता है तब उसके जन्म के पहिले ईश्वर योग्य पदार्थ स्तन में दुग्ध को पीने की व्यवस्था पहिले ही कर देता है।

जीव के प्रकार-

वैशेषिक दर्शन में ''तत्र शरीरंद्विविधं योनिजमयोनिजं च। (वैशे 4/2/6)

1. 'योनिज' जो माता पिता के संग से उत्पन्न होते हैं, जिसे मैथुनी सृष्टि कहते हैं-

2. 'अयोनिज' जो माता पिता के संयोग से उत्पन्न नहीं होते हैं और जिस अमैथुनी सृष्टि कहते हैं।

समस्त प्राणी जो जगत् में उत्पन्न होते हैं, उनकी उत्पत्ति चार प्रकार से होती हैं-

'जरायुज'-जिनके शरीर जरायु (झिल्ली) से लिपटे रहते हैं और इस जरायु को फाड़कर उत्पन्न हुआ करते हैं जैसे मनुष्य पशु आदि।

अंडज- जो अंडों से उत्पन्न होते हैं, जैसे-पंक्षी, साप, मछली आदि।

स्वेदज- जो पसीने और सोल आदि से उत्पन्न होते हैं।

उद्भिज- जो पृथिवी के मिट्टी फाड़कर बीज से उत्पन्न होते हैं जैसे वृक्ष आदि किन्तु इनमें केवल प्राण की क्रिया होती है, और जो मानसून में धरती से निकलकर परिन्दे उड़ने लगते हैं उन्हें उष्मज जीव कहते हैं।

वेद के अनुसार युगों की गणना

सृष्टि विद्या का यदि वेदों से भी अनुशीलन किया जावे तो गणित और विज्ञान का अनेक रूप में दर्शन होता है। वेद में आयु के एक प्रकरण में सृष्टि की आयु का उल्लेख आता है जिसमें युगों की आयु एवं पूर्ण सृष्टि की आयु का भी संख्याओं में दिगदर्शन होता है-

'शतं तेऽयुतं हायनान द्वेयुगे त्रीणी च त्वारि कण्मः।
इन्द्रग्नी विश्वेदेवास्तेऽनुमन्यता महणीयमानाः॥

(अथर्व 8.2.21)

वेद में प्रयुक्त संख्याओं को अंको में लिखे के क्रम से विपरीत से चलाना होगा। इस प्रकार चत्वारी (4) त्रीणी (3) द्वे (2) अयुतं (0000) हजार शतं (000) ते हायन्तन्-युगे कृण्मः- तेरे वर्ष को युगों में विभाजित करता हूं। अर्थात् चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष की सृष्टि की आयु युगों में विभक्त हैं। इससे सृष्टि की आयु की संख्या, 4.32.000000 वेद से ज्ञात हुई। वेद ने इसको बड़ी सुन्दरता से युगों में विभक्त कर दिया है।'

यह संख्या एक हजार चतुर्युगियों की है। इसी को एक ब्रह्मदिन या एक कल्प की संख्या कहते हैं। अब तक स्वायम्भुव आदि छः मनु बीत गये, सातवाँ वैवस्वत मन्वन्तर वर्तमान है।

वैसे ब्रह्म यज्ञ के पहिले आर्यो के दैनिक संकल्प में रोज पढ़ा जाता है। संकल्प का सारांश इस प्रकार है ''द्वितीय परार्द्धे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशति कलौयुगे 5108 गताब्दे....) अर्थात् यह वैवस्वत मनु का अट्ठाइसवां कलि है।

कलियुग की आयु-432000 वर्ष। द्वापर का-8,64,000 वर्ष। त्रेता का 1,29,6000 वर्ष और सतयुग का 17,28,000 वर्ष। यह सब चार युगों का 43,20,000 वर्ष इसमें 1000 से गुणा करने पर-4,32,00,00,000 वर्ष होता है इसी को एक कल्प की संख्या कहते हैं।

तात्पर्य यह कि सृष्टि सम्वत् मनुष्य उत्पति से नहीं, प्रत्युत सृष्टि उत्पत्ति के प्रारम्भ से मानना पड़ेगा। अर्थात् सृष्टि उत्पत्ति स्वायंभुव मनु से, और मनुष्य उत्पत्ति वैवस्वत मनु से माननी पड़ेगी।' वेद एवं मानव सृष्टि सम्वत्-1,96,08,53,109 एक अरब, छियानबे करोड़, आठ लाख, तिरपन हजार, एक सौ नौ वर्ष हो गये हैं।

वैज्ञानिकों का कहना है कि चन्द्र के धरातल पर बैंगनी रंग की रेत और पत्थरों के होने से सृष्टि की उत्पति अरबों वर्ष से अधिक पहले हो सकती है।

यदि चन्द्र अरबों वर्ष से अधिक पुराना है तो पृथ्वी के चारों तरफ समुद्र के खारे जल और हिमालय से प्रमाणित होता है कि यह उससे भी पुराना हो सकता है। आदि सृष्टि की जो गणना वेदों में विद्यमान है, वह बिल्कुल आज सत्य सिद्ध हो रही है।

वेद एवं मानव उत्पति का समय हम लिख चुके हैं। अतः सर्वप्रथम इस विश्व को प्राणी जगत् से पूर्ण करने के लिए ही पूर्व कल्प के अनुसार धाता परमेश्वर ने, सूर्य और चन्द्रमा की रचना कर दी। वेद ने कहा भी-**'सूर्या चन्दमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत। दिवंच पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः॥3॥** (ऋग्वेद) अर्थात् संसार को धारण करने वाले परमेश्वर ने सूर्य और चन्द्रमा को पूर्व सृष्टि के समान बना दिया तथा पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्यौलोक को भी उस प्रभु ने रचा।

अब देखना यह है कि सृष्टि के आदि में अमैथुनी सृष्टि मानव-मानवी की कैसी हुई। इस सम्बन्ध वैसे ही जीवोत्पत्ति के बारे में अनेक मत हैं, किन्तु उन सभी का सिद्धान्त देखते हुए मेरा अनुभव

यह है कि पंचतत्वों को नियमित (बहुत विप्लव के बाद) जीवन उपयोगी बनने में अरबों वर्ष लग गये। साथ ही चन्द्र के आकर्षण प्रभाव से हिमालय और समुद्र में वायु तथा ज्वार-भाटा से लहरें होने लगी थीं। **'ततः समुद्रो अर्णवः।** अतः उस प्रभु से ही समुद्र जल वाला हुआ।

जब जीवन उपयोगी पंचतत्व, जलपूर्ण समुद्र और हिमालय की उत्पत्ति हो गई, तब समुद्र से निकले कहीं-कहीं द्वीपों में वनस्पतियों के उत्पन्न होने में लाखों वर्ष लग गये। उसके पश्चात् जीवाणुओं को उत्पन्न होने में उतना ही समय लगा होगा।

उस समय सूर्य आदि का ताप, रंग का वातावरण भी विभिन्न रूप में था। सूर्य की अतिसूक्ष्म वैगनी रंग की किरणें और 'वरूण' इन्द्र के प्रभाव द्वारा वज्रपात और (शिवम्) पृथिवी की (अग्नेगिरी) ताप के प्रभाव से (सूत्रात्मा, द्वयणुक, त्रसरेणु, यमेना) वायुमण्डल में (मैथेन) (अमोनिया) वाष्प कुछ (उदान) हाइड्रोजन गैस आदि में परिणत होकर (अर्णवः) समुद्र और नदियों के जल में मिल गये।

इन्हीं संघात अणुओं में जीवाणु पाये गये और इनमें प्राण तथा ऊर्जा का संचार होने लगा। कुछ काल के बाद उन्हीं में से अमावस्या-पूर्णिमा को वर्षो ऋतु के बाद विभिन्न प्रकार के उन छोटे जीवों का विकास होने लगा। उनमें से जिन प्राणियों को जो बनना था वे अपने अपने संस्कार बीज के अनुसार विकसित होकर स्वाभाविक रूप में पशु-पक्षी बनकर वन जंगलों में विचरने लगे, इन पशु पक्षियों के होने में भी लाखों वर्ष लग गये। उसके पश्चात् उसी समकालीन हिमालय के आसपास की नदियों एवं मानसरोवार के आसपास भी अनेक प्रकार के जीव उत्पन्न हो गये थे। पुनः परिवर्तन द्वारा उन्हीं में से अनेक कोशीय एक विशेष प्रकार की अमीमा की उत्पत्ति हो गई, दैवी शक्ति से उनमें ऐसा परिवर्तन हुआ कि वे प्राणी मानव उत्पादक बन गये, वे भूमि माता के कुक्षी से रस लेकर बढ़ने लगे। जैसे माता के गर्भ में बालक झिल्ली से ढंका हुआ रहता है, उसी प्रकार उन प्राणियों के गर्भ में वे पल रहे थे। समयानुसार उनके गर्भाण्डों से, उन्हीं स्थानों में उनकी झिल्लियों को फाड़कर मानव मानवी के मझले शरीर उत्पन्न हो गये, जहाँ उनके अनुकूल वातावरण और भोजन की सामग्री थी। (जैसे एक प्रकार का जीव, जन्म देने के बाद स्वयं नष्ट हो जाता है उसी प्रकार वे मानव उत्पादक प्राणी भी नहीं रहे।)।

एक लेखक लिखते हैं-'मानव प्राणियों का प्रथम प्रादुर्भाव वहीं संभव है, जहां जल बाहुल्य-पृथिवी शुष्क, त्रिविध-समीर वायु सेवनार्थ, सबसे ऊधे, कन्द मूल फलादि मानव जीवन की आधारभूत सामग्री से युक्त तथा मानव विकास के अनुकूल स्थान हो। 'हिमालय नाम पर्वत संसार में विख्यात है, वहां पांच योजन लम्बा और आधा योजन चौड़ा एक स्थान है, इस घेरे में एक मेरू नाम का उत्तम पर्वत है। वहीं पर आदिमानव की उत्पत्ति हुई। मेरू के दक्षिण और मानसरोवर के ऊपरी भाग में प्रजा पर धर्म शासन करने वाले मनु का निवास स्थान था (यह मनु की बात तो मानव उत्पत्ति के बहुत काल के के बाद की बात है।)

कहा जाता है कि सृष्टि के पूर्व जब किसी द्वीप का अस्तित्व नहीं था, तब यह विश्व बिल्कुल जलपूर्ण था। पश्चात् जब द्वीप सृष्टि का कार्य प्रारम्भ हुआ तब सर्वप्रथम जिस विशाल खण्ड की उत्पत्ति हुई उसका नाम 'हिमालय' था जो एशिया खण्ड में आज भी 'एवरेस्ट' के नाम से प्रसिद्ध है। आदि सृष्टि अर्थात् जीवन का प्रारम्भ बिन्दु वहीं से हुआ था। उस समय से ही 'सुमेरू' अर्थात् हिमालय पर्वत ऊँची कोटि के योगियों के तप का स्थान रहा है। कहते है कि इस सुमेरू पर्वत के ऊपर उसे दक्षिण भाग में जम्बू-वृक्ष था जिसके नाम से द्वीप का नाम जम्बू द्वीप पड़ा है। (प्रायः विशेष देशों में विशेष वृक्ष हुआ करते हैं। संभव है यह प्रदेश किसी काल में जम्बू वृक्ष प्रधान देश हो। वर्तमान समय में जम्बू रियासत सम्भवतः जम्बू द्वीप का अवशेष हो।'

यह सब आदि सृष्टि के चिन्ह हैं। जैसे महापुरुषों का जन्म लेने का एक युग अर्थात् समय होता है और जिस प्रकार धूम्रकेतु कभी-कभी संसार पर चमकते हैं। उसी प्रकार आदि सृष्टि में संसार के उपकार के लिए मानव के साथ पूर्ण पुण्य महात्माओं का भी प्रादुर्भाव हो जाता है।

प्र.- वे कौन से प्राणी थे जिनके गर्भ में मानव जैसे बालक पलते रहे?

उ.- सृष्टि की आदि में ईश्वरीय नियम द्वारा

प्राणियों की उत्पत्ति के समय, एक ऐसा परिवर्तन हुआ कि एक विशेष प्रकार की एक जैसे अनेक मानव उत्पादक प्राणियों की उत्पत्ति हो गई, जिनके परस्पर संयोग से, उनके गर्भ में मानव-मानवी के शिशु पलने लगे पश्चात् उनके गर्भाण्ड झिल्ली इतने बड़े हो गये कि वे उनमें से निकल गये। (इये हम पहिले भी लिख आये हैं।)

आप लोगों ने विलनी (मृंगी) का जन्म देखा होगा। पहिले तो वह मिट्टी का घर बनाकर उसमें हरे रंग का लम्बा कीड़ा लाकर भर देती है, फिर कुछ दिन बाद उसमें भृंगी उत्पन्न हो जाती है और उस मिट्टी रूपी कोष्ठ में छिद्रकर पूर्ण युवाअवस्था में बाहर निकलकर उड़ जाती है। इसी प्रकार आदि सृष्टि में स्त्री और पुरुषों की उत्पति पूर्ण युवावस्था में हुई।

जो महान शक्ति जीवन उपयोगी पंचतत्वों एवं सूर्य चन्द्रादि को उत्पन्न कर सकती है, जो शक्ति सामुद्रिक जीवों को विचित्र से विचित्र रूप में प्रकट कर सकती है, जो कीट पतंग, रेंगने वाले जीवों को तथा पशु-पक्षियों को उत्पन्न कर सकती है और जो शक्ति एक सेल का अमीबा उत्पन्न कर सकती है, उसी की महान शक्ति द्वारा वह वह अनेक सेल में उत्पन्न होकर और एक में जुड़कर, मानव उत्पादक प्राणी भी बना सकती है।

अत: मनुष्य की उत्पत्ति बिना ईश्वरीय प्रेरणा के नहीं हुई थी। यदि विश्वकर्मा ने मानव को उत्पन्न न किया होता, तो जीवन उपयोगी पंचतत्वों एवं सूर्य चन्द्रदि को प्रकट करने का कोई अर्थ ही न होता। अत: उन योग्य तत्वों का भोक्ता कौन होता?

और आदि में बिना वेदविद्या के कोई ज्ञानी भी कैसे हो सकता था, धर्म और विज्ञान तथा सृष्टि कर्त्ता को कोई कैसे समझता।

इसलिए आदि में उन सहस्त्रों मनुष्यों में 'अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा में चार ऐसे पवित्रातात्मा ऋषि उत्पन्न हुए कि जिनकी आत्मा में सवितादेव से 'ऋक' यजु:, साम और अथर्ववेदों का ज्ञान प्राप्त हो गया। पश्चात् उनसे वेद-विद्या, ब्रह्मा आदि ऋषियों ने प्राप्त की। इससम्बन्ध में ऋषि दयानन्द लिखते हैं कि **'अग्निवायु विभ्यस्तु त्रयं ब्रह्म सनातनम्, दुदोह यज्ञासिद्ध्यर्थमृग्यजुः साम लक्षणम्।।** क्योंकि ब्रह्मादि ने भी वेदों को पढ़ा है। सो श्वेताश्वतर आदि उपनिषदों में यह वचन है कि जिसने ब्रह्मा को उत्पन्न किया और ब्रह्मादि को सृष्टि की आदि अग्नि आदि के द्वारा वेदों का भी उपदेश किया है, उसी परमेश्वर की शरण को हम लोग प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार ऋषियों ने भी वेदों को पढ़ा है। क्योंकि जब मरीच्यादि ऋषि और व्यासादिमुनियों का जन्म भी नहीं हुआ था उस समय में भी, ब्रह्मादि के समीप वेदों का वर्तमान था। इसमें मनु के श्लोक की भी साक्षी है कि पूर्वोक्त अग्नि, रवि और अंगिरा से ब्रह्मा जी ने वेदों को पढ़ा था तो व्यासादि और हम लोगों की तो कथा क्या ही कहनी।

तात्पर्य यह कि-जो मनुष्य उन ऋषियों के सम्पर्क में थे वे ज्ञानी और विद्वान बनते गये और जो लोग उनके सम्पर्क में नहीं आये वे सब अनार्य, हिंसक और जंगली हो गये।

1. सृष्टि में दो प्रधान शक्ति है-'सत् और ऋत्'। उन्हीं के द्वारा पुलिंग से पुरुष और स्त्रीलिंग से स्त्री के अंग बनते है। परन्तु आत्मा अपने संस्कार के अनुसार उन गुणों से युक्त होकर, किसी जन्म में पुरुषों तो किसी जन्म में नारी शरीर को धारण कर लेता है।

2. स्त्री पुरुष में प्रेम, प्राणियों में मैथुन की बुद्धि, शिशु के जन्म लेने पर माता में उसके प्रति ममत्व, दूध पीने का ज्ञान, रक्षा के साधन, सुख-दु:ख का अनुभव, एवं ज्ञातृत्व, कर्तव्य, भोक्तृत्व, यह सब प्रकृति गुण नहीं हैं, 'आत्मा के गुण है।

3. सृष्टि के आदि में अपने पूर्व संस्कार के अनुसार ही आत्माओं के द्वारा विभिन्न प्रकार के शरीर धारी प्राणियों की उत्पत्ति होने लगी थी।

साधकों के लिए स्वर्णिम अवसर

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रुखनगर गुड़गांव में दूषित वातावरण से दूर सुरम्य स्थान पर आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित शौचालय, रसोई स्नानगृह आदि से युक्त योग-साधकों की साधना के लिए बाहर एवं भूमिगत कमरे उपलब्ध हैं। आप सादर आमन्त्रित हैं।

कृपया सम्पर्क करें:- 9416054195, 9812640989, 9813754084

सर्वगुण सम्पन्न श्री रामचन्द्र जी का जीवन-चरित्र

गतांक से आगे

-राजवीर सिंह आर्य, बहादुरगढ़

वह बड़े पराक्रम वाला हनुमान 100 योजन लम्बे समुद्र को पार करके भी नहीं थका। इसके पश्चात हनुमान ने रावण द्वारा विशेष रक्षा की हुई नगरी जिसके चारो ओर प्रचण्ड धनुषों वाले राक्षण नियुक्त थे देखी। उस लंका में सैकड़ों किले नुमा अटारियां थी जो सोने के बन्दनवार से सुशोभित थी, जिसे देखकर हनुमान आश्चर्य चकित रह गया। इसके पश्चात् हनुमान एक पर्वत पर बैठकर विचार करने लगा कि मैं बलवान और क्रूर राक्षसों द्वारा रक्षित इस लंका में प्रवेष नहीं कर सकता हूँ। मुझे कोई ऐसा उपाय सोचना होगा कि मेरी इन दुरात्माओं से भिडंत भी ना हो और मैं जानकी को भी ढूंढ लूं। बार-बार हनुमान यही विचार कर रहा था कि कैसे श्रीरामचन्द्र जी का कार्य कर पाऊंगा। यहां तो वायु भी छिपकर नहीं जा सकती है। फिर इन भयंकर राक्षसों से बचकर जाना संभव नहीं है। अगर संभव हुआ तो रात्रि के समय में अपने ही वेष में एक साधारण सा बनकर प्रवेश करूंगा। यह निश्चय कर हनुमान सूर्य अस्त होने की प्रतीक्षा करने लगा। रात्रि को वह महाबलवान, महान हृदय वाला, दीवार फांदकर लंका में प्रवेश कर गया। जिस तरह से लंका जगमगा रही थी उसकी भव्यता को देखकर हनुमान मन से प्रसन्न हुआ और फिर एक भवन से दूसरे भवनों को खोजता हुआ निर्भय हुआ। रावण के महलों के समीप घूमने लगा। रावण के भवन में सावधानीपूर्वक प्रवेश करने के पश्चात हनुमान वैदेही को ढूंढता रहा। रावण के शयनकक्ष की ओर जाने पर उसने सोने, चांदी, हीरे, जवाहरात, मोती व संगमरमर के सुशोभित बहुत से खम्भे देखे। हनुमान ने रत्नों से भूषित पलंग पर मद्यपान कर सोये हुए रावण को भी देखा और वहीं पर उसने एक चन्द्रमुखी स्त्री को देखा। हनुमान ने अनुमान लगाया कि यही सुन्दरी सीता है पर उस द्वारा श्रृंगार करने और उसके सोने के रंग ढंग को देखकर हनुमान ने अनुमान लगाया कि यह स्त्री सीता नहीं हो सकती क्योंकि राम से अलग हुई सीता का यह स्वरूप नहीं हो सकता। मन्दोदरी आदि स्त्रियों को देखकर हनुमान धर्म भय से बहुत भयभीत हुआ और सोचने लगा कि मेरी दृष्टि आज तक पर-स्त्रियों पर नहीं पड़ी थी। फिर एकाग्रचित होकर इस निश्चय पर पहुंचा कि इनको देखकर मेरे मन में कोई विकार नहीं आया है और बिना स्त्रियों को देखे मैं सीता कैसे खोज सकता हूँ? वहां से निकलकर हनुमान चल पड़ा और अन्य जगह पर सीता को खोजा। उसके ना मिलने पर सोचने लगा

कि लगता है कि मैथिली अब जीवित नहीं है। ऐसा लगता है कि मेरा सारा परिश्रम व्यर्थ गया। मेरे वापस जाने पर सभी वानर मुझसे पूछेंगे कि तूने वहां जाकर क्या किया? वृद्ध जाम्बवान और अंगद मुझे क्या कहेंगे? फिर मन ही मन विचार करने लगा कि मुझे उत्साह नहीं हारना चाहिए। क्योंकि उत्साह से ही सारे कार्य होते हैं। जो स्थान शेष बचे हैं उन्हें खोजूंगा। यही सोचकर वह और उत्साह में भर कर जानकी को ढूंढने लगा। चार इंच तक की जगह भी ढूंढ मारी, सोचने लगा कि कहीं मैना की तरह पिंजरे में तो बन्द नहीं रख छोड़ा। तरह-तरह के विचार हनुमान के मन में आने लगे। वह यह भी सोचने लगा कि मैं कैसे जाकर राम से कहूंगा कि लंका में सीता नहीं है। क्या सीता के बिना राम जीवित रह सकेंगे? यही सब मन में विचार करने के पश्चात हनुमान ने सोचा कि चाहे कुछ भी हो बार-बार लंका में सीता को खोजूंगा और बिना सीता का पता लगाये सुग्रीव को कभी मुंह नहीं दिखाऊंगा। यह जो बड़े-बड़े वृक्षों वाली अशोक वाटिका है इसे मैंने अभी तक नहीं देखा है। इसके पश्चात हनुमान विचित्र वृक्षोंवाली चारो ओर फल-फूलों से लदी हुई अशोक वाटिका को देखने लगा। उस अशोक वाटिका में घूमते-घूमते और ढूंढते-ढूंढते हनुमान ने विचित्रकूट नामक एक पर्वत को देखा। जो बहुत सुहावना था और उसी पर्वत से निकलती हुई एक नदी को देखा और उसके पास एक सुनहरी शीशम को भी देखा जिसके चारो ओर वेदियां बनी हुई थी। वह हनुमान सीता के दर्शन की लालसा से उस शीशम पर चढ़ गया कि अगर सीता यहां कहीं होगी तो प्रातः सायं संध्या करने

वाली सीता अवश्य इस जल वाली नदी पर आवेगी। यह अशोक वाटिका सीता के योग्य है और वह चन्द्रमुखी अगर जीवित है तो अवश्य यहां होगी। इस प्रकार विचारता हुआ वह महाबली शीशम के पत्तों में छिपकर सब और दृष्टि डालता हुआ सीता को देखने की इच्छा से वहीं इन्तजार करने लगा।

टिप्पणी: यहां हम एक बहुत बड़ी काल्पनिक, मनघडंत तथा अविश्वसनीय घटना का वर्णन करके फिर अपने को विद्वान भी समझते हैं जो बड़ा हास्यस्पद लगता है। इस निम्नलिखित घटना का वर्णन तुलसीदास जी कृत रामचरितमानस में आता है तथा और बहुत सी पुस्तकों में भी लिखा मिलता है। हमे वाल्मीकि रामायण में इसका उल्लेख पढ़ने को नहीं मिलता है। आप भी पढ़िए:

सुरसा नाम अहिन्ह कै माता।
पठइन्हि आई कही तेहि बाता॥
आज सुरन्ह मोहि दीन्ह आहारा।
सुनत बचन कह पवन कुमारा॥
राम काजु करि फिरि मैं आवौ।
सीता कई सुधि प्रभुहि सुनावौ॥
तब तव बदन पैठिहऊ आई।
सत्य कहऊं मोहि जान दे भाई॥
कबनेहु जतन देई नहि जाना।
ग्रससि न मोहि कहेऊ हनुमाना॥
जोजन भरि तेहि बदनु पसारा।
कपि तनु कीन्ह दुगन बिस्तारा॥
सोरह योजन मुख तेहि ठयऊ।
तुरत पवनसुत बत्तिस भयऊ॥
जस जस सुरसा बस बढ़ावा।
तासु दून कपि रूप देखावा॥
सत योजन तेहि आनन कीन्हा।
अति लघु रूप पवनसुत लीन्हा॥
बदन पइठि पुनि बाहेर आवा।
मागा बिदा ताहि सिरु नावा॥

(अर्थात् जब हनुमान समुद्र को पर कर रहे थे तो सुरसा नाम की एक भयंकर मायावी राक्षसी ने हनुमान का रास्ता रोक लिया और कहा कि तुम मेरा आहार बनो। हनुमान ने कहा हे माता मैं श्रीरामचन्द्र के कार्य से जा रहा हूँ। वापिस लौटने पर मुझे खा लेना लेकिन वह सुरसा राक्षसी नहीं मानी। ज्यों ही उसने हनुमान को खाने के लिए अपना मुंह खोला तो उससे दो गुण आकर हनुमान ने अपना बना लिया। यहां तक उस सुरसा ने सौ योजन (लगभग 700 किलोमीटर) चौड़ा अपने बदन का आकार बना लिया तो हनुमान ने अपना छोटा सा रूप धारण करके उसके मुख में बैठकर निकल आया और कहा कि हे माता मैं तो आपने मुख में बैठकर भी आ गया हूँ। अगर आप ना खाये तो मैं क्या करूं? सुरसा राक्षसी हनुमान की इस बुद्धिमत्ता से बड़ी प्रसन्न हुई और उसे जाने दिया। अब आप ही सोचिए कि यह रामायण है या किसी भांग खाकर सोये हुए व्यक्ति का स्वप्न! ध्यान रहे कि जहां से हनुमान ने समुद्र पार करना शुरु कर किया था। वहां से लंका की दूरी सौ योजन थी फिर 100 योजन लम्बे चौड़े शरीर आदि की बातें ठीक उसी प्रकार से हैं जैसे भूत-प्रेत की कहानियां दादा-दादी से सुनते थे। दूसरा कुछ विद्वान चर्चा करते हैं कि हनुमान नौका द्वारा नहीं बल्कि सम्पाती द्वारा दिये गये ग्लाईडर (छोटा विशेष विमान) से लंका को पार किया था। इस सम्बन्ध में वाल्मीकि रामायण में स्पष्ट लिखा है कि हनुमान ने नौका द्वारा समुद्र को पार किया। देखिए सु.का. प्रथम सर्ग श्लोक 3,4।

तीसरा इसमें हनुमान के उत्तम चरित्र का भान होता है कि जब उसने मन्दोदरी आदि रावण की रानियों को सोते हुए देखा तो एकान्त में खड़े होकर विचार किया क्या मेरे मन में कोई विकार तो नहीं आया? आत्मा से उतर आया कि नहीं। ऐसे उत्तम चरित्र वाले महापुरुष को कैसे बन्दर मान लिया समझ से परे है। चौथी जो बात हम आपके सामने रख रहे हैं वह यह कि जब लक्ष्मण सुग्रीव के पास जाते हैं तो रास्ते में बड़े-बड़े महात्मा वानरों के महल देखते हैं, जिसमें एक महात्मा बलवान योद्धा सम्पाती का भी है। प्रमाण देखिये। विद्युन्मालेश्च संपाते: सूर्य्याक्षस्य हनुमत। कि. का.सर्ग 19 श्लोक-8 लक्ष्मण ने राजमार्ग में पड़ने वाले विद्युन्मालिका, सम्पाती, सुयीक्ष व हनुमान आदि के महल देखे। हमनें इसे इसीलिए लिखा कि एक सम्पाती को तो आप बन्दर कहते हैं। दूसरे सम्पाती को आप ग्रध (गिध) कहते हैं। पहली बात तो जानवरों, पशुओं व पक्षियों, कीट पतंग आदि के नाम नहीं होते हैं और फिर समान नाम बन्दर ओर गिध का कैसे हो गया? हाँ, बहुत से मनुष्यों के नाम समान पाये जाते हैं। हमारा तो यही निवेदन है कि जो चीज जैसी है उसको वैसा ही मानना चाहिए।

प्राणवायु की ऊर्जा से सबल

- वैद्य अविनाश कुमार श्रीवास्तव

हृदय की संरचना चतुर्कक्षी, चतुर्द्वारी और चतुर्मखी है अर्थात् इसमें चार कक्ष होते हैं, चार कपाट (Valve) होते हैं जो एक ही तरफ खुलते हैं और यह चार रक्त-सरिताओं द्वारा ही शरीर के रक्त वाहिका तन्त्र से जुड़ा रहता है। ऊपर के कक्षों को क्रमश: बाँया और दाँया आलिन्द तथा नीचे के कक्षों को बाँया और दायाँ निलय कहते है। यूँ समझ लीजिए कि यह एक प्रकार से चार कमरों वाला डयूप्लेक्स फ्लेट है। दोनों आलिन्द पतली भित्तियों वाले कक्ष हैं जो शिराओं से रक्त ग्रहण करते हैं और निलय मोटे घने मायोकार्डियम वाले कक्ष हैं जो बलपूर्वक रक्त को हृदय से बाहर पंप करते हैं। दोनों आलिन्दों और निलयों के बीच एक भित्ति होती है, जो हृदय के दाँये और बाँये हिस्सों को अलग करती है। प्रकृति ने हृदय को एक ही तरफ खुलने वाले चार कपाट या वाल्व भी दिये है ताकि रक्त एक ही दिशा में प्रवाहित हो। दाँये आलिन्द और दाँये निलय के बीच के वाल्व को ट्राइकरिपड वाल्व कहते हैं। इसी तरह बाँये आलिन्द और बाँये निलय के बीच के वाल्व को माइट्रल वाल्व कहते हैं। दाँये निलय और मुख्य पलमोनरी धमनी के बीच के अर्धचन्द्राकार वाल्व को पलमोनरी वाल्व और बाँये निलय और महाधमनी के बीच के अर्धचन्द्राकर वाल्व को एओर्टिक वाल्व कहते हैं। जब निलय का संकुचन होता है तो आलिन्द और निलय के बीच के वाल्व बन्द हो जाते हैं जो रक्त को आलिन्द में जाने से रोकते हैं। जब निलय का विस्तारण होता है, ये अर्धचन्द्राकार वाल्व बन्द होकर रक्त को धामनियों से निलय में आने से रोकते हैं।

हृदय में रक्त परिवहन की कार्यप्रणाली: यह महत्त्वपूर्ण है कि दोनों आलिन्द और निलय आकुंचन और विस्तारण एक साथ करते हैं। हृदय में दाँये और बाँये दोनों निलय रक्त को एक साथ बाहर पम्प करते हैं। शरीर के विभिन्न अंगो से अशुद्ध रक्त महाशिरा द्वारा दाँये आलिन्द में कार्बन-डाई ऑक्साइड से भरे सूक्ष्म सिलेन्डरों से लदे लाल कणों को लेकर पहुँचता है। शरीर की विभिन्न कोशिकाएं और ऊतक प्राणवायु (ऑक्सीजन) ग्रहण कर सिलेन्डरों में कार्बन-डाई ऑक्साइड भर देते हैं। आप ऐसे समझिये कि प्रोटीन और लोहे से बने ये सिलेन्डर हिमोग्लोबिन का काल्पनिक रूप हैं और लाल रक्त कण इन सिलेन्डरों का वाहन हैं (जैसे इन्डेन गैस के लाल सिलेन्डरों से लढ़ी लारी। ट्राइकरिपट वाल्व खुलने पर रक्त दाँये निलय में भर जाता है और जब निलय का आकुंचन होता है तो ट्राइकरिपड वाल्व बन्द हो जाता है तथा पलमोनरी वाल्व खुल जाता है। फलस्वरूप रक्त पलमोनरी धमनियों द्वारा शुद्धिकरण हेतु फुफ्फुसों में चला जाता है। फुफ्फुसों में रक्त का शुद्धिकरण होता है यानि कार्बन-डाई ऑक्साइड से भरे सिलेन्डर खाली हो जाते हैं और फुफ्फुस उनमें जीवन-ऊर्जा से परिपूर्ण प्राणवायु (ऑक्सीजन) भर देते हैं। प्राणवायु में ऊर्जा की इतनी आभा और चमक होती है कि इनसे भरे सिलेन्डर उजले और लाल दिखाई देते हैं। इन प्राणवायु से भरे सिलेन्डरों के कारण ही रक्त लाल दिखाई देता है। अब रक्त प्राणवायु से भरे चमकते लाल सिलेन्डर लेकर खुशी-खुशी बाँये आलिन्द में पहुंचाता है। जब बाँये निलय का विस्तारण होता है तो माइट्रल वाल्व खुल जाता है और रक्त बाँये निलय में भर जाता है। इसके बाद बाँया निलय एक शक्तिशाली आकुंचन करता है, जो माइट्रल वाल्व बन्द करता है तथा एओर्टिक वाल्व को खोलता है और बलपूर्वक चमकता लाल रक्त महाध्मनी द्वारा शरीर के विभिन्न अंगो को पम्प हो जाता है।

दिल से जुड़े दिलचस्प तथ्य: स्त्रियों का दिल अपेक्षाकृत तेज धड़कता है। - हृदय की पहली शल्य क्रिया डॉ. डेनियल हॉल ने 1893 में की थी। - मानव हृदय एक मिनट में 72 बार, एक दिन में 1 लाख बार, एक वर्ष में 3.5 करोड़ बार और पूरे जीवनकाल में 3 अरब बार धड़कता है। - अपने पूरे जीवनकाल में हृदय 10 लाख बैरल रक्त पंप करता है। - विश्व का पहला हृदय-प्रत्यारोपण 1967 में केपटाउन, साउथ अफ्रिका में हुआ था। - विश्व में रोज 2700 लोग हृदय-रोग से मरते हैं। - हृदय मात्र 12 ऑन्स का होता है पर रोज 2000 गैलन रक्त 60000 मील लम्बे वाहिकाओं के जाल में प्रवाहित करता है। - फ्राँस के चिकित्सक रेने लेनेक को स्त्रियों के वक्षस्थल पर कान रख हृदय की धड़कन सुनना बहुत असहज लगता था,

इसलिए उन्होंने स्टेथोस्कोप का आविष्कार किया था। – 1903 में विलेम इन्थोवेन ने ई.सी.जी. का आविष्कार किया था। – मानव भ्रूण के विकास काल के 23वें दिन, जब वह भ्रूण माँ के पेट में सिर्फ मटर के दाने के बराबर होता है, दिल धड़कना आरंभ करता है और उम्र भर धड़कता रहता है। – करीब 150 टन भारी व्हेल मछली का दिल एक मिनट में 7 बार धड़कता है, जबकि 3 टन के हाथी का 46 बार, बिल्ली (1.3 किग्रा) का 240 बार और पीतचटकी नामक पक्षी का हृदय 1000 बार धड़कता है। – मनुष्य का हृदय जीवन भर जितना काम करता है, उतने श्रम से एक मालगाड़ी को यूरोप के सबसे ऊंचे पहाड़ माउन्ट ब्लैक (उँचाई 4810 मीटर) तक पहुंचाया जा सकता है।

पतंजलि योगपीठ की व्यवस्था पत्र के अनुसार

1. अर्जुन क्वाथ–300 ग्राम 1 चम्मच दवा 400 ग्राम पानी में पकायें, जब 100 ग्राम बाकी रह जाये तब छानकर सुबह शाम खाल पेट लें।

2. मोती पिष्टी–4 ग्राम, सांगेयसव पिष्टी–10 ग्राम, अकीक पिष्टी– 5 ग्राम, योगेन्द्र रस–1 ग्राम, अमृता सत– 10 ग्राम। सब दवा मिलाकर 60 पुडिया बनाना सुबह शाम भोजन से आधा घण्टा पहले शहद से लें।

3. हृदयामृत वटी–40 ग्राम, 2–2 गोली भोजन के बाद उष्ण जल से लें। हृदय सम्बन्धित सामान्य रक्तचाप, हृदय धमनी अवरोध एवं हृदय गति बढ़ने पर सामान्यत: निम्न चिकित्सा से लाभ प्राप्त किया जा सकता है। इसके सेवन से पूर्व आयुर्वेदिक चिकित्सक से परामर्श लेना आवश्यक है। **– योग दर्शन से साभार**

अर्थी व जनाजा

– डॉ. दर्शन लाल, आजाद पानीपत

यह हिन्दू की अर्थी है यह मुस्लम का जनाज़ा है,
इधर कब्रिस्तान का उधर शमशान का दरवाजा है।
नसल–ए–इन्सां भुक्त रही नफरत का खम्याजा है,
कितना नुकसान हो रहा नहीं इसका अन्दाजा है।

नफरत के माहौल से विप्ररा इन्सानियत का शीराज़ा है,
जहर, आलूद आसमां हुआ न कहीं हवा ताजा है।
अकल की दौलत से खुदा ने आदम को नवाजा है,
अकल से काम ले आदमी यह अकल का तकाजा है।

धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार
केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

विशिष्ट	23.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	28.00	रु. प्रति किलो
विशेष	45.00	रु. प्रति किलो
डीलक्स	65.00	रु. प्रति किलो
सुपर डीलक्स	120.00	रु. प्रति किलो

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006

फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872

कैसे होता है प्राणायाम से पाप का नाश?

- डॉ. विजयपाल शास्त्री

स्मृतियो (धर्मशास्त्रों) में पापनाश के लिए प्रायश्चित का विधान किया है। वहां एक बात सामान्य रूप से पाई जाती है कि प्राय: सभी पापों के विविध प्रायश्चित्तों के साथ एक प्रायश्चित 'प्राणायाम' करना भी है। प्रायश्चित का अभिप्राय है-पाप हो जाने पर पछतावा करते हुए तप करने का निश्चय कर कोई विशिष्ट तप करना। ऐसा करने से व्यक्ति पाप से दूर हो जाता है, जैसा कि मनुस्मृति में कहा है-

प्रायो नाम तप: प्रोक्तं चित्तां निश्चय उच्यते।
तपोनिश्चयसंयुक्तं प्रायश्चित्तामिति स्मृतम्।।
(मनुस्मृति-11.5)

प्राय: का अर्थ तप है और चित्ता का अर्थ-निश्चय। पाप करने के अनन्तर पाप की वासना को, उसके संस्कार को नष्ट करना आवश्यक है जिससे पाप की पुनरावृत्ति न हो। इसके लिए तप करने का निश्चय करना प्रायश्चित है। विविध पापों के प्रायश्चित्त के प्रसंग में धर्मशास्त्रकारों ने प्राणायाम को एक मुख्य प्रायश्चित्ता बताया है-

प्राणायामशतं कार्य सर्वपापापनुत्ताये।
(याज्ञवल्वयस्मृति-3.305)

इसका भाव है कि सभी पापों को दूर करने के लिए 100 प्राणायाम करने चाहिए। इससे यह स्पष्ट है कि धर्मशास्त्रकारों की दृष्टि में प्राणायाम एक पापनाशक साधन है। यह सभी पापों को दूर करने के लिए एक सामान्य प्रायश्चित है। इसके पीछे कारण यह है कि पाप मन की विकृति से होता है और प्राणायाम मन की विकृति को दूर करता है। न केवल धर्मशास्त्रकारों की दृष्टि में अपितु योगशास्त्रियों की दृष्टि में भी प्राणायाम को पाप, कल्मष व अशुद्धि का नाशक माना जाता है। जैसा कि तपो न प्राणायामात् परम, ततो विशुद्धिर्मलानां दीप्तिश्च ज्ञानस्य। (योगसूत्र, व्यासभाष्य 2.52)

इसका अर्थ है-प्राणायाम से बढ़कर कोई तप नहीं है। इससे मलों की शुद्धि व ज्ञान (विवेक) की वृद्धि होती है। प्राणायाम एक शारीरिक क्रिया है। इससे पापनाश कैसे होता है? यह विचार का विषय है। हमारे प्राचीन ऋषियों ने इस विषय में गहन चिन्तन व अनुभव किया है। उनके अनुभवी वचन हमारा मार्गदर्शन करते हैं कि प्राणायाम एक तप है। इसके करने से शरीर, इन्द्रियाँ व मन तपते हैं तथा उनके विकार, चञ्चलता व कल्मष नष्ट हो जाते हैं। यह तथ्य मनुस्मृति में निम्न शब्दों में कहा गया है-

दह्यन्ते ध्मायमानानां धातूनां हि यथा मला:। तथेन्द्रियाणां दह्यन्ते दोषा: प्राणस्य विग्रहात् (मनुस्मृति 6.70)।

जैसे अग्नि में तपाने से सुवर्ण आदि धातुओं के मल जल जाते हैं उसी प्रकार प्राणायाम से मन व इन्द्रियों के दोष जल जाते हैं। इससे स्पष्ट है कि प्राणायाम से मन के विकार काम, क्रोध, लोभ आदि व विषयासक्ति क्षीण हो जाती है तथा प्राणायाम का अभ्यासी व्यक्ति जितेन्द्रिय होकर पापमुक्त जीवन जीता है। श्रीमदभगवद्गीता में हम इस तथ्य का और भी अधिक व विशद विवेचन पाते हैं कि प्राणायाम से पाप नष्ट हो जाते हैं। अर्जुन श्रीकृष्ण से पूछते हैं-

अथ केन प्रयुक्त **(यं पाप चरति पूरूष:।**
अनिच्छऽपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजित:।।
(श्रीमदभगवद्गीता-3.36)

हे भगवन्! किससे प्रेरित होकर यह पुरुष पाप करता है। व्यक्ति न चाहता हुआ भी किसके द्वारा हठपूर्वक पाप में प्रवृत्त कर दिया जाता है? भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन के इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहते हैं कि-

काम एष 'क्रोध एष रजोगुणसमुदभव:।
महाशनो महापाप्मा विद्धयेनमिह वैरिणम्।।
(श्रीमद्भगवद्गीता-3.37)

हे अर्जुन! रजोगुण से उत्पन्न होने वाला यह जो काम और क्रोध है, यही वह वैरी है, जो अनिच्छुक पुरुष को भी पाप में प्रवृत्त कर देता है। यह काम महाशन अर्थात् कभी न तृप्त होने वाला है। यह असीम है। कामनाओं की बाधा होते हुए ही तुरन्त उत्पन्न होने वाला जो क्रोध है, वह साक्षात् महापाप रूप है। क्रोध को महापाप कहने का अभिप्राय यह है कि 'युवावस्था

में विवेकहीन व्यक्ति बड़े से बड़ा पाप कर गुजरता है। उसका कारण क्रोध ही है। इसलिए महापाप का कारण होने से इसे प्रस्तुत श्लोक में साक्षात् महापाप ही कहा है। इससे स्पष्ट हुआ कि न चाहते हुए भी मनुष्य को पाप में लगाने वाला रजोगुणजन्य काम व क्रोध है। जब तक रजोगुण प्रबल रहेगा तब तक काम व क्रोध भी मनुष्य को वशीभूत किए रहते हैं। इनेस मुक्त होने के लिए, पाप से बचने के लिए रजोगुणी प्रवृत्ति को क्षीण करना आवश्यक है। गीता में इसके लिए अन्य आध्यात्मिक उपायों के साथ प्राणायाम को एक महत्वपूर्ण उपाय के रूप में बताया है। वहां प्राणायाम को यज्ञ के रूप में प्रस्तुत करते हुए उक्त कल्मषों (मलों व पापों) का नाशक कहा गया है-

अपाने जुह्वति प्राणं प्राणेअपानं तथापरे।
प्राणापानगती रूद्वा प्राणायामपरायणाः।।
अपरे नियताहाराः प्राणान् प्राणेषु जुह्वति।
सर्वेइप्येते यज्ञविदो यज्ञक्षपितकल्मषाः।

(श्रीमदभगवद्गीता-4.29-30)

इस गीतावचन में स्पष्टरूप से कहा गया है कि प्राणायाम एक ऐसा यज्ञ है, जो कल्मषो, मन व इन्द्रियों के विकारों को क्षीण कर देता है। इसका भाव यही है कि प्राणायाम से जब शरीर, मन व इन्द्रियों को तपाया जाता है तो इनके कल्मष जल जाते हैं। व्यक्ति रजोगुण के वश में न रहकर सत्वगुणप्रधान हो जाता है। इससे उसकी प्रवृत्ति पाप में न होकर पुण्यकर्मो में होती है। रजोगुण के क्षीण होने व सत्वगुण के बढ़ने से उसके मन में एकाग्रता आ जाती है। एकाग्रता से ज्ञान प्रकट होता है और व्यक्ति उचित-अनुचित का विवेक कर अनुचित को छोड़ देता है तथा उचित कार्यो में प्रवृत्त होता है। इस प्रकार प्राणायाम से बनी सात्विक वृत्ति मनुष्य को पापमुक्त, सच्चरित्र व सन्मार्गगामी बना देती है। ऐसा व्यक्ति परिवार, समाज व राष्ट्र का परम हितकारी बन जाता है।

इस प्रकार प्राणायाम व्यक्तिगत जीवन में शुचिता लाकर हमारे सामाजिक जीवन को भी उज्जवल करने का अमोघ साधन है।

प्राणायाम से पापनाश की इस प्रक्रिया का समर्थन महर्षि पतञ्जलि-रचित योगसूत्र में भी किया गया है। वहाँ प्राणायाम का स्वरूप बताने के उपरान्त इसका लाभ बताते हुए महर्षि कहते हैं-

ततः श्रयते प्रकाशावरणाम्। धरणासु च योग्यता मनसः। (योगसूत्र-2.52-53)

इसका भाव है कि प्राणायाम करने से प्रकाश (ज्ञान) का आवरण (पर्दा) तमोगुण क्षीण हो जाता है। अर्थात् जब प्राणायाम का अभ्यासी व्यक्ति अपने शरीर, मन व इन्द्रियों को प्राणायाम रूपी तप से तपाता है तो उसके मन का वह तमोगुण क्षीण हो जाता है, जिसने ज्ञान के ऊपर पर्दा डाल रखा था तथा मनुष्य को मूढ़ता की स्थिति में रखा था। प्राणायाम का दूसरा लाभ बताते हुए महर्षि कहते हैं कि इससे धारणा में, टिकाव में, एकाग्रता साधने में मन की योग्यता बनती है। इसका भाव है कि प्राणायामरूपी तप से शरीर, मन व इन्द्रियों को तपाने से वह रजोगुण रूपी दोष क्षीण हो जाता है, जो मन को चंचल बनाए रहता है। रजोगुण का लक्षण चंचलता है, राग व द्वेष है-चलञ्च रजः (सांख्यकारिका-13), रागद्वेषी रजः स्मृतम् (मनुस्मृति-12.27)। यह रजोगुण ही मन की धारणा (स्थिरता) नहीं बनने देता है। महर्षि पतंजलि कहते हैं कि प्राणायाम से मन की धारणा (टिकाव) में योग्यता बन जाती है।

इसका सीधा-सा अर्थ यही है कि प्राणायामरूपी तप से मन का रजोगुण क्षीण हो जाता है व मन में स्थिरता (एकाग्रता) की योग्यता आ जाती है। इससे पहले गीता के प्रमाण से कहा जा चुका है कि रजोगुण से उत्पन्न होने वाला काम व क्रोध मनुष्य को पाप में लगा देता है। उस रजोगुण का प्राणायाम से क्षीण होना महर्षि पतंजलि के वचन से भी प्रमाणित है। इस प्रकार यह स्पष्ट हुआ कि मनुष्य को पाप में लगाने वाला रजोगुण प्राणायाम से क्षीण होता है। रजोगुण के क्षीण होने से इससे उत्पन्न होने वाले काम व क्रोध शिथिल पड़ जाते हैं। रजोगुण से होने वाली विषयासक्ति प्राणायाम के अभ्यास से दुर्बल होने लगती है और मनुष्य की प्रवृत्ति पाप से हटकर पुण्य में होने लगती है। अतः योगदर्शन के उक्त वचन भी गीताप्रोक्त उस तथ्य को पुष्ट करते हैं कि प्राणायाम द्वारा रजोगुण नष्ट होता है।

योगदर्शन की साधना पद्धति के अनुसार प्राणायाम द्वारा तमोगुण व रजोगुण के क्षीण होने पर साधक की साधना में प्रगति होती है। उसका निर्मल ज्ञान बढ़ता है व मन का टिकाव होने लगता है। मन का यह टिकाव (एकाग्रता) ही आगे साधना में उन्नति का मूल आधार है। इसी से साधक आगे समाधि की उच्च स्थिति तक पहुँचता है। इस प्रकार यह एकाग्रता आध्यात्मिक पथ के पथिक के लिए आगे की उन्नति का मूल है। प्राणायाम के अभ्यास से प्राप्त यह एकाग्रता व मन की निर्मलता लौकिक व्यक्ति के लिए भी बड़े काम की चीज है। मनुष्य का यह लौकिक व पारलौकिक कल्याण मन की इसी एकाग्रता व निर्मलता पर निर्भर है, जिसे सिद्ध करने के लिए प्राणायाम एक अमोघ उपाय है। चरकसंहिता में मन की इस एकाग्रता व निर्मलता को मन: समाधि नाम से बतलाते हुए इसे ही सारे कल्याणों का मूल कहा है-

प्रेत्य चेह च यच्छेय: श्रेयो मोक्षे च यत्परम्।
मन: समाधै तत्सर्वमायर्त्ता सर्वदेहिनाम्।।

(चरकसंहिता, चिकित्सास्थान-24.52)

इसका भाव यह है कि इस जन्म में तथा मरने के उपरान्त अगले जन्म में जो शुभ है एवं मोक्ष रूपी जो शुभ है, वह सब मन की एकाग्रता पर ही निर्भर है। जिसका मन रजोगुणजन्य काम, क्रोध आदि से व्याकुल न होकर एकाग्र व निष्कल्मष हो गया है, वह व्यक्ति ही इस जन्म में व अगले जन्म में शुभ व कल्याण को प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति अन्तत: मोक्ष (मुक्ति) भी प्राप्त कर लेता है।

उपर्युक्त वर्णन से यह स्पष्ट हो गया है कि यद्यपि प्राणायाम एक शारीरिक क्रिया है, तथापित तप रूपी यह क्रिया शास्त्रकारों द्वारा बताई पूर्वोक्त रीति से पाप को नष्ट कर देती है। मन को निर्मल, निष्पाप व एकाग्र बना देती है। प्राणायाम की इसी क्षमता के कारण धार्मशास्त्रकारों के इस आशय के कुछ वचन प्रस्तुत कर रहे हैं-

अह राज्या च यान् जन्तून निहन्त्यज्ञानतो यति:। तेषां स्नात्वा विशु (डर्थ प्राणायामान् षडाचरेत्।।
(मनुस्मृति:6.69)

अथवा मुच्यते पापात् प्राणायामपरायण:। प्राणायामैर्दहेत्सर्व शरीरे चच्च पातकम्।। (अरूणस्मृति-129)

यथा वेगगतो यु: शुष्कार्द्र दहतीन्धनम्।
प्रणायामैस्तथा पापं शुष्कार्द्र नात्रा संशय:।।

(अरूणस्मृति-130)

प्राणायामशतं कार्य सर्वपापप्रणाशनम्।
उपपातकजातानामनादिष्टस्य चैव हि।।

(बृहद्योगियाज्ञवल्यस्मृति-8.36)

गीताधययनशीलस्य प्राणायामपरस्य च। नैव सन्ति हि पापानि पूर्वजन्मकृतानि च।। (गीतामाहात्म्यम्)

प्राणायाम की इस पापनाशक क्षमता का वर्णन मूलत: हमें वेदों में मिलता है। उसी के आधार पर शास्त्रकारों ने उपर्युक्त रीति से इसका विस्तार किया है। ऋग्वेद में कहा है कि-

कृत्रस्य त्वा श्र्भसथादीषमाणा विश्रभे देवा अजहुर्ये सखाय:। मरूद्भिरिन्द्र सख्यं ते अस्त्वथेमा विश्र्भा: पृतना जयासि।।

(ऋग्वेद 8.96.7)

हे आत्मन्! वृत्रा (पाप) की हुंकार से भयभीत होते हुए जिन सब देवों (दिव्यगुणों, अच्छी प्रवृत्तियों) ने तुझे छोड़ दिया था, ऐसे समय में यदि तेरी मित्रता मरूद्रणों (प्राणों) से हो जाए तो तू वृत्रा (पाप) की इस सारी सेना को जीत सकता है। इस मन्त्र में स्पष्टरूप से कहा गया है कि पाप के प्रबल होने पर सद्गुण मनुष्य को छोड़ जाते हैं। यदि मनुष्य प्राणों के साथ मित्रता कर ले अर्थात् प्राणायाम की साधना करे तो वह पाप की इस सारी सेना को जीत सकता है। इस वेदमन्त्र में यह तथ्य स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि प्राणायाम पापनाशक साधन है। एक दूसरे वेदमन्त्र में भी यह तथ्य प्रतिपादित किया है कि-

यदा गच्छात्यसुनीतिमेतामशा देवानां वशनीर्भवाति।

अर्थात जब मनुष्य असुनीति (प्राणायाम को साध ता है, तो वह देवों (इन्द्रियों) का वशकर्ता (स्वामी) बन जाता है, उनका दास नहीं रहता। इससे भी यह स्पष्ट है कि प्राणायाम से इन्द्रियों की विषयासुक्ति नष्ट हो जाती है तथा व्यक्ति जितेन्द्रिय व पापरहित हो जाता है। भारतीय ऋषियों ने इस तथ्य को अति प्राचीन काल में ही बहुत अच्छी तरह से जान लिया था। अत:

उन्होंने प्राणायाम की क्रिया को प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनिवार्यता की जाने वाली संध्या-विधि में ही जोड़ दिया था। संसार में अन्य किसी भी धर्म की उपासना-पद्धति ऐसा नहीं है, जिसमें प्राणायाम किया जाता हो।

वैदिक संध्या ही एक ऐसी उपासना-पद्धति है, जिसमें प्राणायाम मन्त्र हैं तथा प्राणायाम करना एक अनिवार्य अंग है। मन की व्यग्रता, व्याकुलता, बेचैनी को दूर करने का भी यह सुपरीक्षित उपाय है। जब ऐसी अवस्था अनुभव करें तो धैर्यपूर्वक गहरे श्वास लेना शुरु कर दें, बाह्य व आभ्यन्तर प्राणायाम की 10-15 आवृत्ति करें। कुछ ही देर में आप देखेंगे कि मन की अशान्ति दूर हो रही है तथा मन शान्त व स्थिर होने लगा है। हमारे मन की चंचलता, अशान्ति, विकृति व पाप को दूर करने वाला यह अचूक उपाय बहुत पहले ऋषि-मुनियों ने खोज लिया था, यह आज भी इतना ही कारगर व प्रासंगिक है।

- योग सन्देश से साभार

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
2. चौ. नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ, हरि.
3. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
4. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
5. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
6. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
7. चौ. मित्रसेन जी सिन्धु आर्य, उद्योगपति, रोहतक
8. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
9. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
10. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
11. श्री जे.आर. वरमानी, गुड़गाँव, हरियाणा
12. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
13. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
14. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
15. श्री राव हरिशचन्द्र जी आर्य, नागपुर
16. श्री ओम्प्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. श्री जयदेव जी हसीजा 'प्रेमी' वानप्रस्थी, गुड़गांव
19. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
20. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
21. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
22. अमित कौशिक, सु. श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
23. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
24. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
25. कृष्णा दियोरी भरेली, सु. श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
26. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
27. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
28. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
29. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
30. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
31. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
32. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
33. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
34. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
35. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
36. कु. विदिशा, सु श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र
37. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
38. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
39. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
40. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
41. श्री वेदपाल जी आर्य, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
42. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
43. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
44. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
45. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
46. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
47. श्री स्वदीप दास जी गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
48. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
49. चौ. हरनाथ सिंह जी राघव, खेड़ला, गुड़गांव
50. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
51. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
52. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
53. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
54. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
55. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
56. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
57. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
58. यज्ञ समिति झज्जर
59. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
60. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
61. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार, दिल्ली
62. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
63. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा, गुडगांव, (हरियाणा)
64. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
65. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
66. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
67. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
68. सुपरिटेन्डैन्ट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली

निश्रेयस-अभ्युदय की जननी प्राचीन भारतीय समाज

- डॉ. बाबु राम ज्ञवाली

हमारे प्राचीन ऋषि-मुनि गहन चिन्तन, विश्लेषण एवं अनुभविक व्यवहार के पश्चात् इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सामाजिक कल्याण एवं व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास के लिए वर्ण और आश्रम की सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था अनिवार्य है। उनके विचार में सम्पूर्ण राज्य संयन्त्र कुशलतापूर्वक कार्य सम्पन्न करे इसके लिए आवश्यक है कि समाज के सभी वर्ण निर्भिकतापूर्वक अपना कार्य ठीक उसी प्रकार सम्पन्न करते रहें जिस प्रकार एक विशाल यन्त्र के कलपुर्जे अपनी-अपनी जगहों पर अच्छी तरह संचालित रहते हैं। लगभग 2500 वर्ष पूर्व तक्षशिला के आचार्य एवं अर्थशास्त्र ग्रन्थ के रचयिता कौटिल्य का कहना है-जिस राज्य व्यवस्था में वार्ता (अर्थशास्त्र) और दण्डनीति (राजनीति) के प्रयोग से चार वर्ण और चार आश्रमयुक्त समाज की समुचित रक्षा एवं पालन किया जाता है उस राज्य व्यवस्था में शान्ति की प्रचुर संभावनाएं रहती हैं।

वर्ण-व्यवस्थाः वर्ण का अर्थ होता है-रंग। इसीलिए वर्ण व्यवस्था का निकट पर्याय होता है वर्ग व्यवस्था (क्लास डिविजन)। वर्ग विभाजन की तरह ही वर्ण विभाजन भी सामाजिक, आर्थिक विभाजन है। अतः वर्ण विभाजन के आर्थिक प्रभाव बहुत ही महत्वपूर्ण होते हैं। यह केवल सामाजिक या सांस्कृतिक विभाजन मात्र नहीं है, परन्तु वर्ण विभाजन का अर्थ जाति विभाजन नहीं है।

वर्ण विभाजन गुण और कर्म के आधार में निर्धारित था। गीता में कहा गया है चातुर्वर्ण मया सृष्टा गुण कर्म विभागशः। आचार्य शुक्र भी कहते हैं, केवल जन्म से ही कोई ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र नहीं होता, अपितु गुण और कर्म के भेद से होता है। उनका कहना है कि सभी ब्राह्मा से उत्पन्न हुए हैं तथापि सभी ब्राह्मण नहीं कहला सकते। जन्म से उत्तम मनुष्य संसर्गवश नीच हो सकता है।

वर्ण विभाजन का सिद्धान्त स्पष्ट होने पर भी इसका व्यावहारिक प्रयोग इतना प्राचीन है कि इसकी व्याख्या एक जटिल कार्य है। ग्रन्थों के अध्ययन से ऐसा लगता है कि शुरु में केवल एक ही वर्ण था। महाभारत में यह बात स्पष्ट शब्दों में कही गयी है। शुक्र कहते हैं-सभी वर्ण ब्राह्मण वर्ण से ही उत्पन्न हुए हैं। इसीलिए कोई बड़ा या छोटा नहीं है। परन्तु वर्णव्यवस्था देश की शान्ति सुव्यवस्था तथा उन्नति के लिए आवश्यक तत्व के रूप में स्वीकार की गई है। आचार्य कौटिलय ने राज्य का एक प्रमुख कर्तव्य यह बताया है कि वह सबको अपने-अपने स्वधर्म में स्थिर रखे। सभी वर्ण के लोग अपने-अपने स्वधर्म का पालन करें क्योंकि स्वधर्म का यह पालन स्वर्ग और मोक्ष के लिए होता है। यदि स्वधर्म अतिक्रमण किया जाये तो समाज में अव्यवस्था उत्पन्न हो जायेगी तथा लोक नष्ट हो जायेगा।

चार भाग का यह विभाजन ज्ञान-विज्ञान के विविध क्षेत्रों में मिलता है। उदाहरणार्थ चार वेद, चार वर्ण, चार आश्रम, चार पुरुषार्थ, चार प्राणी इत्यादि। यह विभाजन केवल विश्लेषण की सुविधा के लिए था, न कि मर्यादा क्रम के लिए। यह सामाजिक विभाजन आधुनिक श्रम विभाजन सिद्धान्त अनुरूप है। (वैसे यह तथ्य भी कम आश्चर्यजनक नहीं है कि आधुनिक वैज्ञानिक भी मानवीय रक्त और क्रोमोजोम को चार भाग में ही विभाजन करते हैं) आज भी अर्थशास्त्र की पाठ्य पुस्तकों में पेशागत श्रम विभाजन का जो विवरण प्राप्त होता है वह वर्ण विभाजन के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। जिस प्रकार पेशागत श्रम विभाजन के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। जिस प्रकार पेशागत श्रम विभाजन का उद्देश्य उत्पादन में वृद्धि करना है उसी तरह वर्ण विभाजन का उद्देश्य समाज की उत्पादन प्रणाली को व्यवस्थित एवं नियमित करना ही है। इसीलिए यह विभाजन प्राचीन राज्य प्रणाली में सामान्यतः स्वीकार की गयी। विद्वानों के अनुसार वर्णाश्रम व्यवस्था में वंश परम्परा और वातावरण दोनों का अनूठा संयोग मिलता है।

ग्रीक दार्शनिक प्लेटो ने आदर्श समाज के लिए जिस सामाजिक व्यवस्था की परिकल्पना की है वह वर्ण व्यवस्था जैसी ही है। प्लेटो ने तीन वर्ग की परिकल्पना की है-उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग एवं निम्न

वर्ग। उच्च वर्ग में उन्होंने राजा, दार्शनिक एवं उच्च प्रशासकों को, मध्यम वर्ग में सैनिक, रक्षक एवं सहायकों को तथा निम्न वर्ग में कृषक, कारीगर एवं श्रमिकों को वर्गीकृत किया है।

शुक्र नीति, कौटिलीय अर्थशास्त्र तथा अन्य ग्रन्थों में वर्ण विभाजन का कार्य विभाजन भी स्पष्ट किया गया है। वेद, अध्ययन, अध्यापन, यज्ञ तथा दान ब्राह्मण वर्ग के काम बताए गए हैं। सज्जनों की रक्षा, दुष्टों का नाश क्षत्रिय कर्म बताए गए हैं। कृषि, गोपालन और व्यापार के कार्य करने वाले को वैश्य कहा गया है। सम्पूर्ण समाज की सेवा में तत्पर रहने वाले सेवा वर्ग को शूद्र कहा गया है। परन्तु ध्यान देने योग्य बात यह है कि महाभारत काल में सेवा वर्ग के व्यक्तियों को अपने नि:सन्तान मालिक के मृत्यु पश्चात् उसको पिण्ड दान करना उसका एक जरूरी कर्तव्य होता था। संक्षेप में-

आश्रम व्यवस्था-वर्ण व्यवस्था की भांति आश्रम व्यवस्था भी व्यक्तिगत एवं सामाजिक संरचना का महत्वपूर्ण भाग रही है। व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास के लिए आश्रम व्यवस्था को आवश्यक माना गया है। परन्तु दु:ख के साथ कहना पड़ता है कि वर्ण व्यवस्था के बारे में जितनी विवेचना होती है आश्रम व्यवस्था के बारे में नहीं होती। जबकि वर्ण और आश्रम अलग व्यवस्थाएं नहीं है। वास्तव में दोनों को संयुक्त रूप अर्थात् वर्णाश्रम व्यवस्था ही कहा जाता है।

ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास-चार आश्रम माने गए हैं। पच्चीस वर्ष तक ब्रह्मचर्य, पच्चीस से पचास वर्ष तक गृहस्थ, पचास से पिचहत्तर तक वानप्रस्थ और उसके बाद संन्यास। आश्रम का अर्थ है गुरु के रहने की जगह अथवा अनुशासन का आश्रय लेकर रहना। महाभारत में कहा गया है कि आश्रम जीवन के चार विश्राम स्थल एवं सीढ़ियां है। जिन पर चढ़ते हुए व्यक्ति उच्चतम शिखर को प्राप्त होता है। यद्यपि आश्रम व्यवस्था का प्रारम्भ उपनिषद् में चारों वर्णो का उल्लेख मिलता है। आचार्य कौटिल्य ने भी चारों आश्रम में विश्वास प्रकट किया है।

ब्रह्मचर्याश्रम भावी जीवन की तैयारी है इसीलिए ब्रह्मचारी का कर्तव्य है कि वह नियमित स्वाध्याय करे, नित्य स्नान करे, भिक्षाटन करे एवं गुरु के समीप रहे। गुरु की अनुपस्थिति में अपने समान शाखाध्यायी के निकट रहे। गृहस्थ का कर्तव्य है कि वह अपनी परम्परा के अनुकूल कार्यो द्वारा जीविकोपार्जन करे। सगोत्र एवं असगोत्र समाज का कर्तव्य है ब्रह्मचर्यपूर्वक रहना, भूमि पर सोना, अग्निहोत्र तथा प्रतिदिन स्नान करना, देव पितर तथा अभ्यागतों की सेवा करे, प्राण रक्षा के लिए अल्पाहार करे, मन-वचन और कर्म में पवित्रता रखे। जीवन के इन चार विभाजन को निम्नलिखित प्रकार व्यक्त किया जा सकता है।

ब्रहाचर्य- भावी जीवन तैयारी एवं अनुशासन की अवस्था। गृहस्थ- उत्पादन एवं उपभोग अवस्था। वानप्रस्थ-ज्ञान एवं अनुभव के सामंजस्य की अवस्था। संन्यास- आत्म कल्याण की अवस्था।

त्रिवर्ग एवं उसका सन्तुलन: वर्ण और आश्रम की व्यवस्था स्वयं में लक्ष्य नहीं है। इस व्यवस्था का लक्ष्य है पुरुषार्थ की प्राप्ति। पुरुषार्थ भी चार बताए गए हैं। अर्थ, धर्म, काम एवं मोक्ष। पूर्वीय संस्कृति के अध्येताओं ने इस तथ्य को स्वीकार किया है कि इस संस्कृति का अन्तिम लक्ष्य है मुक्ति, जिसको मोक्ष कहा जाता है। परन्तु सामाजिक व्यक्ति के लिए तीन पुरुषार्थ महत्वपूर्ण है। इन तीनों पुरुषार्थो को सम्मिलित रूप से त्रिवर्ग कहा जाता है। ये हैं अर्थ, काम और धर्म। आचार्य कौटिल्य के विचार में अर्थ सबसे महत्वपूर्ण है। वे कहते हैं-अर्थ मूलौ हि धर्मकामौ अर्थात् काम और धर्म दोनों का मूल अर्थ है।

महाभारतकार तथा अर्थशास्त्रकार के विचार में मानवीय कल्याण त्रिवर्ग के सन्तुलित उपयोग में निर्भर है। त्रिवर्ग का सीधा अर्थ है तीन प्रकार के वर्ग-अर्थ, काम एवं धर्म। वास्तव में प्रत्येक वर्ग में मानव जीवन के अनिगिनत कार्यकलाप होते हैं। प्रत्येक वर्ग में निर्धारित कार्यकलाप का समुच्चय का बुद्धिमतापूर्ण समन्वय ही मानव जीवन में सुख एवं सन्तोष कहलाता है। जीवन की पूर्णता, सुख, सन्तोष एवं सामाजिक वर्गो के पारस्परिक समन्वय के लिए इन तीनों का सन्तुलित उपयोग आवश्यक माना जाता है। त्रिवर्ग की अवधारणा हिन्दु दर्शनकारों की मौलिक अवधारणा है, इसीलिए कभी-कभी इसको हिन्दु सन्तुलन भी कहा जाता है।

(शेष अगले अंक में)

हंसो और हंसाओ

– रवि शास्त्री, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

- टीचर (कलाश में)- बच्चों आयकर, बिक्रीकर, भूमिकर से मिलता जुलता शब्द बताओ।
  पप्पु-मैडम एक नहीं तीन सुनो-सुनील गावस्कर, सचिन तेंदुलकर और दिलीप वेंगसकर।
- मरते समय पति ने पत्नी से सच बताना चाहा-मैं तुम्हें जीवन भर धोखा देता रहा सच तो यह है कि दर्जनों औरतों से मेरे नाजायज संबंध थे।
  पत्नी-मैं भी सच बताना चाहुंगी कि मुझे तुम्हारी इस बात का पता था तुम बीमारी से नहीं मर रहे हो। मैंने तुम्हें धीरे-धीरे असर करने वाला जहर दिया है।
- पत्नी-आज मैंने सपने में देखा कि तुम मेरे लिए हीरो का हार लाये हो। ये बताओ इस सपने का क्या मतलब है।
  पति- आज शाम को बताऊँगा।
  शाम को पति ने पत्नी को पैकेट दिया।
  पत्नी ने एक पैकेट खोला तो उसमें एक किताब निकली किताब का नाम था, 'सपनो का मतलब'।
- सेठानी नौकरानी से -क्यों महारानी जी आज आने में इतनी देर क्यों लगा दी।
  नौकरानी-सेठानी जी मैं सीढ़ियों से गिर गई थी।
  सेठानी-तो क्या उठने में इतनी देर लगती है।
- अध्यापक पप्पु से-कल जो हिन्दी में पाठ पढ़ाया था उसे सुनाओं
  पप्पु-टीचार आता नहीं है।
  अध्यापक-नहीं आता तो ऐसा करो जो आता है वही सुना दो।
  पप्पु-आशिक बनाया आशिक बनाया आपने
  अध्यापक-ये क्या कर रहे हो।
  पप्पु- मुझे तो गाना आता है वही सुना रहा हूँ।

सामाजिक क्रान्ति के लिए ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ें। **–विक्रमदेव शास्त्री**

बने इन्सान तू

– डॉ. दर्शन लाल जी आजाद

गीता बाईबल पढ़े, पढ़ता है कुरान तू,
ईसाई हिन्दू बना, बन बैठा मुसलमान तू।
सम्प्रदाये में उलझ क्यों बना है शैतान तू,
तू इन्सान हे समझ, बन सिर्फ इन्सान तू।

छोड़ अपने इस मज़हब का अभिमान तू,
दया अपना, कर सबका ही कल्याण तू।
मज़हब में रंग भूला खुदा व भगवान तू
प्रेम कर प्रेम ऐ बन्दे न बन पाशान तू।

सर पे उठाये फिरता है आसमान तू,
खड़ा करता है किस लिये तूफोन तू।
चला रहा है मज़हब की दुकान तू,
ईमान बेच कर बना है बेईमान तू।

ऐ मज़हब के गुलाम रहेगा परेशान तू,
तू कौन है जरा खुद को पहचान तू।
खुद को समझ कर खुद पे अहसान तू,
किसी रोते को आज़ाद दे मुस्कान तू।

धरती को न बांटो

इस धरती को न पूर्व पश्चिम में बांटो,
आदमी को न हिन्दू मुस्लिम में बांटो।
एक ही झण्डा काफी है सारे जहां में,
न दुनियां अलग-अलग परचम में बांटो।

हर आदमी के गम एक से ही है,
न गम को इस उस गम में बांटो।
एक ही कानून-ए-कुदरत है सब जगह,
नज़ाम-ए-कुदरत को न धर्म में बांटो।

झूठ और सच की आमेज़श है यहां,
विवेक से गहराई में उत्तर सत्य को छांटो।
नया कहना ही आदत है आज़ाद की,
गर गलत कहे तो बेशक उसे डांटो।

21वीं शताब्दी में संस्कृत का भविष्य

– डॉ. राजीव रंजन शुक्ल

बदलते वैश्विक परिदृश्य ने बहुत सारी प्रचलित मान्यताओं को ध्वस्त कर दिया है। जीवन की प्रत्येक गतिविधि प्रयोजन पर आधारित हो गयी है। शिक्षा का विशाल क्षितिज अर्थ (धन) की परिधि तक सिमट कर रह गया है। साहित्य संभवत: अर्थकारी विद्या की श्रेणी में परिगणित नहीं होता। अत: इसे लाभकारी नहीं माना जाता है। विशेषकर, संस्कृत जैसी प्राचीन भाषा को मृत मानकर उसकी उपेक्षा की जा रही है, जो किसी भी प्रकार से उचित नहीं कहा जा सकता, क्योंकि यह ग्रीक तथा लैटिन भाषाओं से अधिक परिपूर्ण एवं सुसंस्कृत है। इसकी वैज्ञानिकता तथा इसके साहित्य की विशालता एवं विविधता की तमाम विद्वानों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है। इसके अतिरिक्त, इसमें रोजगार के नित्य नए अवसारों का सृजन हो रहा है। आज भारतीय कृषि अनुसंधान के 49 केन्द्रीय संस्थानों, 5 राष्ट्रीय ब्यूरो, 32 राष्ट्रीय अनुंसान केन्द्रो, भारतीय उच्च शिक्षा संस्थान, भारतीय चिकित्सा परिषद्, स्वास्थ्य अनुसंधान केन्द्रो में संस्कृत जानने वालों की भारी संख्या में आवश्यकता है। संस्कृत व्याकरण के आधार पर अमेरिका के सॉफ्टवेयर इंजीनियरों ने 'एस्के' नामक पैकेज से 11 यूरोपीय भाषाओं को रोमन लिपि में परिवर्तित करने में सफलता पायी है। इसी प्रकार सभी भारतीय भाषाओं 'इस्की' यूनीकोड द्वारा देवनागरी लिपि में परिवर्तित करने का सपना साकार किया है। इस प्रकार, विभिन्न प्रकार के सॉफ्टवेयर विकसित करने में सहायता देने के लिए संस्कृतज्ञों की बहुत मांग है। इसी प्रकार संस्कृत जानने वालों के लिए सरकारी तथा गैरसरकारी क्षेत्र में प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार के असीमित अवसर उपलब्ध हैं, जो संस्कृति के रोजगारपरक उज्जवल भविष्य की ओर संकेत करने के लिए पर्याप्त प्रतीत हो रहे हैं।

पंथ लोक सेवा आयोग तथा राज्य लोक सेवा आयोगों की परीक्षाओं में संस्कृत को सरल, सुबोध रूचिकर एवं अंक प्रदायक विकल्प के रूप में स्वीकार किया जाता है, जिसमें अभिव्यक्ति की शुद्धता, स्पष्टता तथा तार्किक विश्लेषण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। साथ ही कम समय में इसकी अच्छी तैयारी कर सफलता प्राप्त की जा सकती है।

देश के प्राय: सभी विश्वविद्यालयों में संस्कृत के अध्ययन की सुविधा उपलब्ध है। वांछित योग्यता प्राप्त कर विद्यालयों में शिक्षक तथा विश्वविद्यालयों में व्याख्यता बनकर सम्मानपूर्वक आय अर्जित की जा सकती है। आज देश के विश्वविद्यालयों के अतिरिक्त विश्व के 1,3,7 देशों के विश्व विद्यालयों में संस्कृत की जा रही है जहां बड़ी संस्था में शोध कार्य किए जा रहे हैं। इन कार्यो के लिए भारी संख्या में संस्कृत शोधार्थियों की आवश्यकता है। साथ ही उन्हें आकर्षक छात्रवृत्तियाँ भी दी जाती हैं।

संस्कृत का ग्रीक लैटिन जैसी प्राचीन भाषाओं के साथ बहुत ही अंतरंग संबंध है। पारसियों की धार्मिक पुस्तक आवेस्ता तथा ऋग्वेद की भाषा में परस्पर इतनी समानता है कि उन्हें एक ही भाषा की दो विभाषाओं के रूप में स्वीकार किया जाने लगा। इसी भाषिक संबंध के कारण यूरोप में भाषा विज्ञान अथवा लिग्विस्टिक्स, नामक एक नए अध्ययन क्षेत्र का प्रारंभ हुआ। विश्व के विकसित देशो अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, चीन, जापान, फ्रांस आदि देशों के भाषा शिक्षण संस्थानों एवं भाषिक प्रयोगशालाओं में संस्कृत वैयाकरणों तथा भाषाशास्त्रियों की बहुत अधिक मांग है।

विश्व में उपलब्ध ज्ञान विज्ञान के आधुनिकतम शोधों तथा सूचनाओं को तत्काल अपनी भाषा में प्रकट करने के लिए अनुवाद की महती उपादेयता है। निरंतर बदलते परिवेश के कारण सरकारी तथा गैर-सरकारी दोनों ही क्षेत्रों में संस्कृत भाषा के जानकर अनुवादकों के लिए रोजगार के विपुल अवसर हैं एवं प्रतिवर्ष हजारों अनुवादकों के पद विज्ञापित होते रहते हैं, विशेषकर, अनुंसधान केन्द्रों में अनुवादकों की अत्यधिक मांग होती है। विशेषज्ञों के मत में संस्कृत कम्प्यूटर के लिए सर्वाधिक उपयुक्त भाषा मानी जाती है। कम्प्यूटर के क्षेत्र में विभिन्न तकनीकी संस्थानों में सॉफ्टवेयर इंजीनियरों को पाणिनी की अष्टाध्यायी की सूत्रबद्धता, संक्षिप्तता एवं वैज्ञानिक तारतम्यता की व्याख्या

कर सॉफ्टवेयर प्रोग्रामों, पैकेजों, कोडो तथा डिकोडो के निर्माण में सहायता करने के लिए व्याकरण के विद्वानों की आवश्यकता होती है, जहाँ आकर्षक वेतन दिए जाते हैं।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय में भारतीय अनुसंधानों, जैव विविधता, चिकित्सकीय वनौषधि पदार्थो की पेटेंट चोरी को रोकने के लिए संस्कृतज्ञों की आवश्यकता होती है जो संस्कृत वाङमय में उपलब्ध सन्दर्भो को उद्घाटित कर उसका भारतीय अधिकार सिद्ध कर सकें। अभी हाल में बासमती चावल, नीम तथा हल्दी का अमेरिका के द्वारा पेटेंट करा लेने पर संस्कृत विद्वानों के सहयोग से भारत को यह पेटेंट मिल सकता था। केन्द्र तथा राज्य सरकारों के विभिन्न मंत्रालयों पारिभाषिक शब्दावली आयोग आदि में संस्कृत के जानकारों की जरूरत पड़ती है। वहाँ वे नवीन शब्दों को बनाने तथा पुराने शब्दों में नए अर्थ भरने का कार्य करते हैं।

आकाशवाणी तथा दूरदर्शन पर आज अनेक कार्यक्रम संस्कृत भाषा में प्रसारित किए जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों के संपादन, लेखन, समाचार वाचन तथा उद्घोषक के रूप में अनेक अवसर उपलब्ध हैं। पुनः संस्कृत भाषा में 150 के करीब समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं प्रकाशित की जा रही हैं, जिनमें विभिन्न पदों पर काम करने के लिए सुयोग्य व्यक्तियों की आवश्यकता होती है।

पुरातत्व एवं प्राचीन भारतीय इतिहास के लेखन एवं अन्वेषण के लिए संस्कृतज्ञों की आवश्यकता होती है। चूंकि प्राचीन काल में संस्कृत राजकाज की भाषा थी इसलिए बहुत सारे अभिलेख संस्कृत में मिलते हैं। इसके अतिरिक्त विदेशी विद्वान पारिटर प्रभृति ने पुराणों के आधार पर कई राजवंशों की वंशावली का निर्माण किया है। इन सब आवश्यकताओं को देखते हुए संस्कृत का महत्व स्वयं सिद्ध हो जाता है।

हिन्दू कानूनों के आधार जीमूतवाहन का दायभाग तथा विज्ञानेश्वर कृत मीताक्षरा हैं। इसलिए इन कानूनों की व्याख्या के लिए संस्कृत की जानकारी आवश्यक है। भारत के अधिकांश कानूनी दस्तावेज तथा कानून फारसी भाषा में लिखे गए हैं जिन्हें आज समझने में कठिनाई महसूस होती है। इसलिए फारसी शब्दों के स्थान पर हिन्दी शब्दों के निर्माण के लिए अथवा समानार्थी शब्द खोजने के लिए संस्कृत की जानकारी जरूरी है।

गणित के क्षेत्र में संस्कृत के जाननेवालों की आवश्यकता है। महावीर कृत गणितसार संग्रह, लीलावती तथा वैदिक गणित द्वारा कम समय में कठिन प्रश्नों तथा गणनाओं को हल किया जा सकता है। जिनका उद्घाटन मात्र एक संस्कृतज्ञ ही कर सकता है। प्रबंधन प्रशिक्षण के क्षेत्र में छात्रों को एक पत्र के रूप में योग तथा श्रीमद्भगवद्गीता की शिक्षा दी जा रही है। जिसके लिए योग प्रशिक्षक तथा संस्कृतज्ञ की जरूरत होती है। बाजार की भाषा के लिए भी विज्ञापनों में संस्कृत शब्दों, श्लोकों तथा मन्त्रों का प्रयोग मुक्त रूप में होने लगा है।

संस्कृत भारतीय ज्ञान-विज्ञान की पराकाष्ठा है। चिकित्सा, हर्बल उत्पाद, प्रबंधन कौशल, कम्पयूटर, वास्तुशास्त्र तथा अनुसंधान की भूमिका का निर्वाह करने में संस्कृत सर्व समर्थ है। वस्तुतः संस्कृत भाषा कल्पवृक्ष के समान है। यह याचकों को उदारतापूर्वक प्रतिदान देकर कृतकृत्य कर देती है।

– संस्कृत शिक्षक, डी.ए.वी., वाल्मी, पटना

आश्रम द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

प्राप्ति स्थान : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जि. झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

दूरभाष : 01276-230195 **चलभाष :** 09416054195

गोवंश हत्या के दुष्परिणाम एवं गोरक्षा के उपाय

- कन्हैयालाल आर्य, कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा

ईश्वर ने मनुष्य के जीवन को गाय से जोड़ दिया है। बिना गाय के मनुष्य आरोग्यता पूर्वक जीवित नहीं रह सकता। अत: प्रत्येक घर में अधिक संख्या में गाय पाली जाती थी। गाय-बैल परिवार का सदस्य माना जाता था। गाय के बिना घर मरघट के समान माना जाता था। पहले हर चौराहे और हर गली में दूध, मलाई की दुकानें होती थी। आज हर चौराहे और हर गली में अण्डा, चाय, शराब और मांस की दुकानें है। ऐसा क्यों? औषधि सेवन करने के लिए भी गौदुग्ध एवं गोघृत मिलना असम्भव हो गया है? क्या यही मानव रक्षा है।

भारत ही नहीं अपितु पूरे विश्व में मानव जगत की चार मुख्य समस्याएं है: 1. उत्पादन, 2. जनसंख्या, 3. आरोग्यता, 4. प्राकृतिक अनुकूलता। इन चारों समस्याओं का स्थायी समाधान गोवंश हत्या बन्दी है। गोसंवर्धन और असंख्य पशु पक्षी की हत्या बन्दी है। आज सम्पूर्ण विश्व में विशेष रूप से भारत में जितनी भी आर्थिक नीतियां हैं वे सभी गोवंश हत्या से उत्पन्न दुष्परिणामों का प्रतिरोध करने वाली प्रतिरोधी अर्थनीतियां है। दूसरे शब्दों में गोवंश की हत्या से जो विभिन्न प्रकार की क्षतियाँ हो रही है, उन क्षतियों की पूर्ति करने में सरकार और जनता दोनों परेशान है।

अधिक मात्रा में गोदुग्ध एवं गोघृत खाने वाले व्यक्तियों के शरीर में चर्बी अधिक होने के कारण सन्तान कम होती है और सूखा खाने वाले व्यक्ति को अधिक। गोदुग्ध एवं गोघृत के अभाव में जनसंख्या दुतगति से बढ़ती गई। ईश्वरीय प्राकृतिक व्यवस्था को बिगाड़ कर गर्भनिरोधक नशाबन्दी आदि कृत्रिम व्यवस्था की जा रही है। करोड़ों वर्षो से मानव धरती पर है। कभी आज की तरह जनसंख्या वृद्धि का संकट नहीं आया। लेकिन केवल पिछले सौ वर्षो के अन्दर जनसंख्या वृद्धि का संकट क्यों? गोवंश की कमी का यह दुष्परिणाम है। आदि अनादि काल से गोवंश मानव को स्वस्थ, निरोग, हुष्ट-पुष्ट बलवान और सुख समृद्धि से भरपूर बनाते हुए जनसंख्या को भी नियन्त्रित करता आया है।

गोबर-गोमूत्र की जैविक खाद के अभाव में विनाशकारी कृत्रिम रासायनिक खाद, पौधों की विषैली दवाओं और बैलों के अभाव में ट्रैक्टरों का प्रयोग करना पड़ रहा है।

कन्हैया लाल आर्य

गोदुग्ध एवं गोघृत के अभाव में नकली दूध, नकली घी (वनस्पति घी) और रासायनिक खाद तथा पौधों की विषैली दवाओं के छिड़कने से उपजाये गये रोगयुक्त एवं विषाक्त अन्न शाक, सब्जी खाने के कारण भारत का व्यक्ति रोगी बन गया। दवा, डाक्टर और हस्तपाल में अरबों रूपये प्रतिदिन व्यय हो रहे हैं। जो गोवंश हत्या से प्राप्त विदेशी मुद्रा की अपेक्षा हजार गुना अधिक मूल्यवान है।

वास्तव में यह सभी प्रतिरोधी उद्योग धन्धे केवल गोवंश हत्या से उत्पन्न दुष्परिणामों की रोकथाम मात्र है। ये हमारी कोई सुख समृद्धि के प्रतीक नहीं है। यह तो जनता पर बढ़ता हुआ आर्थिक बोझ है। गोवंश हत्या कर गोमास, गोचर्म आदि के विक्रय से जितना आर्थिक लाभ हो रहा है। उससे लाख गुणा अधिक गोवंश हत्या से होने वाली क्षतियों की पूर्ति में व्यय करना पड़ रहा है। फिर भी क्षतिपूर्ति असम्भव प्रतीत हो रही है। गोवंश की हत्या करवाने वाली सरकार हानि में भी लाभ देख रही है।

गोवंश हत्या बन्दी की अवस्था में धीरे-धीरे कृत्रिम अर्थव्यवस्था समाप्त होगी और जैसे जैसे गोवंश की संख्या बढ़ेगी तथा उसका संवर्धन होगा वैसे वैसे ईश्वरीय प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार स्वत: अपनी ही गति से गतिमान अर्थव्यवस्था उत्पन्न होगी। सभी प्रतिक्रियावादी नकली घी (वनस्पति घी), नकली दूध, नकली दूध, रासायनिक खाद, कीटानाशक, गर्भनिरोधक, नशाबन्दी, ट्रैक्टरों से खेत की जुताई तथा प्रतिक्रियावादी सभी कल कारखाने बन्द हो जायेंगे। सौ दो सौ वर्षो में जब धरती के अन्दर का तेल भण्डार समाप्त होगा अथवा अरब आदि देश किसी कारणवश तेल देना बन्द कर देंगे तो खेतों की जुताई असम्भव हो जायेगी और आने वाली पीढ़ियां हमें कोसेंगी, चूकि गोवंश हत्या के कारण बैल समाप्ति की ओर है। ट्रैक्टर चलेगा नहीं और

बैल रहेगा नहीं तो हमारा तथा कथित विकास धरा का धरा रह जायेगा।

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी गोकरूणा निधि में एक गाय की एक पीढ़ी के द्वारा हमारा कितना उपकार होता है उसका वर्णन किया है।

जो एक गाय न्यून से न्यून दो सेर दूध देती है और दूसरी बीस सेर तो प्रत्येक गाय के ग्यारह सेर दूध होने में कोई शंका नहीं। इस हिसाब से एक मास में 8.25 सवा आठ मन दूध होता है। एक गाय कम से कम 6 महीने और दूसरी अधिक से अधिक 18 महीने तक दूध देती है, तो दोनों का मध्य भाग प्रत्येक गाय के दूध देने में बारह महीने होते हैं। इस हिसाब से बारह महीनों का दूध 99 (निन्नायवे) मन होता है।

इतने दूध को औटा कर प्रति सेर में एक छटांक चावल और डेढ़ छटांक चीनी डाल कर खीर बना खावें तो प्रत्येक पुरुष के लिए दो सेर दूध की खीर पुष्फल होती है। क्योंकि यह भी एक मध्य भाग की गिनती है, अर्थात् कोई दो सेर दूध की खीर से अधिक खा गया और कोई न्यून, इस हिसाब से एक प्रसूता गाय के दूध से 1980 (एक हजार नौ सौ अस्सी) मनुष्य एक बार तृप्त होते हैं। गाय नयून से न्यून 8 और अधिक से अधिक 18 बार ब्याती है, इसका मध्य भाग तेरह बार आया तो 25740 मनुष्य एक गाय के जन्म भर के दूध मात्र से एक बार तृप्त हो सकता है।

इस गाय की एक पीढ़ी में छः बछियाँ और सात बछड़े हुए इनमें से एक ही मृत्यु रोगादि से होना सम्भव है, तो भी बारह रहे। उन छः बछियाओं के दूध मात्र से उक्त प्रकार 154440 मनुष्यों का पालन हो सकता है। अब रहे छः बैल, उनमें एक जोड़ी से दोनों साख में 200 दो सौ मन अन्न उत्पन्न हो सकता है। इस प्रकार तीन जोड़ी 600 छः सौ मन अन्न उत्पन्न कर सकती है और उनके कार्य का मध्य भाग आठ वर्ष है। इस हिसाब से 4800 (चार हजार आठ सौ) मन अन्न उत्पन्न करने की शक्ति एक जन्म में तीनों जोड़ी की है। चार हजार अठाई सौ मन अन्न से प्रत्येक मनुष्य का तीन पाव अन्न भोजन से गिने तो 256000 दो लाख छप्पन हजार मनुष्यों का एक बार भोजन होता है। दूध और अन्न को मिला देखने से निश्चय है कि 410440 (चार लाख दस हजार चार सौ चालीस) मनुष्यों का पालन एक बार के भोजन से होता है। अब छः गाय की पीढ़ी पर पीढ़ियों का हिसाब लगा कर देखा जावे तो असंख्य मनुष्यों का पालन हो सकता है और इसके मांस से अनुमान है कि केवल अस्सी मांसाहारी मनुष्य एक बार तृप्त हो सकते है। देखो! तुच्छ लाभ के लिए लाखों प्राणियों को मार असंख्य मनुष्यों की हानि करना महापाप क्यों नहीं?

यद्यपि गाय के दूध से भैंस का दूध कुछ अधिक और बैलों से भैंसा कुछ न्यून लाभ पहुंचाता है, तथापि जितना गाय के दूध और बैलों के उपयोग से मनुष्यों को सुखों का लाभ होता है उतना भैंसियों के दूध और भैंसो से नहीं। क्योंकि जितने आरोग्यकारक और बुद्धिवर्द्धक आदि गुण गाय के दूध और बैलों में होते हैं, उतने भैंस के दूध और भैंसे आदि में नहीं हो सकते। इसलिए आर्यो ने गाय पालन को सर्वोत्तम माना है।

गोवंश रक्षा के उपाय

1. गोवंश हत्या से हिन्दुओं के धार्मिक स्वतंत्रता के मौलिक अधिकार का हनन हो रहा है। इसलिए आज ही इसी क्षण माननीय प्रधानमन्त्री पूरे भारत में सम्पूर्ण गोवंश की हत्या पूर्णरूप से बन्द करने का अध्यादेश जारी करें। किसी भी सरकार को

श्री चन्द्रभान चौधरी (पूर्व डी.सी.पी.) द्वारा एकत्रित दान राशि

श्रीमती चन्द्रकला जी राजपाल, पश्चिम विहार, दिल्ली	500/-
श्रीमती सुभाषनी आर्या जी पश्चिम विहार नई दिल्ली-63	250/-
डॉ. पुष्पलता वर्मा, विकासपुरी, नई दिल्ली	150/-
श्रीमती प्रवीण मेहन्दीरत्ता, विकासपुरी, दिल्ली	150/-
श्री सेठी परिवार, विकासपुरी, नई दिल्ली	100/-
श्री एच.पी. खंडेवाल विकासपुरी, नई दिल्ली	100/-
फर्रूखनगर आश्रम के लिए	
श्रीमती चन्द्रकला जी राजपाल, पश्चिम विहार, दिल्ली	500/-
श्रीमती सुभावनी आर्या जी पश्चिम विहार, नई दिल्ली	500/-

किसी की भी धार्मिक स्वतंत्रता के मौलिक अधिकार को छीनने का अधिकार नहीं है।

2. भारत सरकार अविलम्ब पूरे देश में सम्पूर्ण गोवंश की हत्या बंदी केन्द्रीय कानून बनाये।
3. पूरे देश में सभी कत्लखानों को अविलम्ब बन्द किया जाये तथा सभी कसाइयों के लाइसेंस रद्द किये जाये और उन्हें गौ-दुग्ध उत्पादन तथा अन्य व्यवसाय के लिए प्रोत्साहित किया जाये ताकि उनके संस्कार एवं जीवनस्तर में भी सुधार आ सके। हिन्दू-मुस्लिम में आपसी प्रेम एवं आपसी भाईचारा की भावना उत्पन्न हो सके। जिससे कि राष्ट्रीय एकता एवं राष्ट्रीय अखण्डता का मार्ग प्रशस्त हो।
4. प्रतिदिन लगभग 25-30 हजार गोवंश कत्ल के लिए भारत से बंगला देश जा रहा है। इसे अविलम्ब रोका जाये।
5. भारत से गोचर्म व गोमांस तथा सभी प्रकार के मांस का निर्यात बन्द किया जाये।
6. विदेशी सांडो के वीर्य से और कृत्रिम गर्भाधान विधि से देशी नस्ल के गोवंश का सर्वनाश करना अविलम्ब बन्द किया जाये। भारतीय नस्ल के अच्छे सांड तैयार किए जायें।
7. भारतीय गोवंश अनुसंधान केन्द्र की स्थाना की जाये तथा उसे पर्याप्त कोष प्रदान किये जायें।
8. रासायनिक उर्वरकों तथा पौधों एवं फसलों की कीटनाशक जहरीली दवाओं के उत्पादन, प्रयोग एवं विक्रय पर प्रतिबन्ध लगाया जाय तथा जैविक कृषि को प्रोत्साहित किया जाये।
9. ट्रैक्टर से खेतों की जुताई बन्द करायी जाये। बैलों से ही खेतों की जुताई करायी जाये। इसके लिए कानूनी प्रावधान की व्यवस्था की जाये। ऐसा होने पर किसान गाय-बैल अधिक संख्या में पालेंगे और किसान मजदूरों को अधिक रोजगार मिलेगा। गोवंश की संख्या अधिक होने से गोबर-गोमूत्र का खाद अधिक प्राप्त होगा। रासायनिक खाद की आवश्यकता समाप्त हो जाएंगी।
10. इन्जेक्शन देकर दूध दुहना प्रतिबन्धित किया जाय और ऐसे इन्जेक्शन के निर्माण में भी प्रतिबन्ध लगाया जाय।
11. देश के सभी बैंको से गोपालको, कृषकों और बेरोजगार युवक-युवतियों को केवल देशी नस्ल के सांड, बैल और गाय पालने के लिए न्यूनतम ब्याज दरों पर ऋण दिलाया जाये। सरकार की ओर से उन्हें अधिकाधिक अनुदान भी दिया जाये ताकि गोपालन गो-दुग्ध उत्पादन एवं कृषि को प्रोत्साहन मिल सके।
12. देश के प्रत्येक ग्राम पंचायत में अधिकाधिक गोचर भूमि की व्यवस्था की जाये और हरा चारा उपजाया जाये। बेदखल गोचर भूमियों को पुनः वापस दिलाया जाये। गोचर भूमि की विक्रय पर प्रतिबन्ध लगाया जाये।
13. लोकसभा भवन के समक्ष गोभक्त शहीद चौक में गोभक्त शहीद स्मारक की स्थापना की जाये।
14. जूता-चप्पल की बड़ी-बड़ी सभी कम्पनियों को अविलम्ब बन्द किया जाये। ताकि देश के चर्मकारों को रोजगार मिल सके।
15. गोवंश रक्षण एवं संवर्धन के विषय को केन्द्रीय सरकार की विषय सूची में रखी जाये। चूंकि यह सम्पूर्ण राष्ट्र के उत्थान पतन का विषय है।
16. गोवंश को आदर्श राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाये।
17. गोशालाओं, गोरक्षणियों और गोसदनों को अधिकाधिक भूमि एवं अनुदान सरलातापूर्वक प्रदान किया जाये।

– 4/45, शिवाजी नगर, गुड़गांव हरियाणा,
चलभाष-09911197073

कमल खिला है

कमल खिला है खिला रहेगा देख लेना
भ्रष्टाचार अब नहीं चलेगा देख लेना
बहुत दुःखी थी जनता भारी महंगाई की मार से
महंगाई का भूत मिटेगा देख लेना
चोरी, डाके, बलात्कार अब नहीं चलेंगे देश में,
राम राज फिर से आएगी देख लेना।।
कालाधन जो जमा पड़ा है कई विदेशी बैंको में,
सारा धन वापिस आएगा देख लेना।
घौटालों में लिप्त रहे जो मन्त्री सन्तरी व्यापारी
जेल से कोई नहीं बचेगा देख लेना।

– कवि कृष्ण 'सौमित्र'

प्रयाग और काशी-यात्रा दयानन्द के आलोक में

- अभिमन्यु कुमार खुल्लर

प्रयागराज (इलाहाबाद) व काशी (वाराणसी) की यात्रा करने से पूर्व तथा कथित तीर्थों की वास्तविकता तथा उनके कार्य, व्यापार का सही, समुचित वर्णन महर्षि कृत ग्रंथों में पढ़ चुके थे।

रही सही कसर पूरी कर दी अभिनय सम्राट दिलीपकुमार अभिनीत फिल्म ''संघर्ष'' ने। पंड़ों की करतूतों का ऐसा रोमांचकारी दिग्दर्शन इस फिल्म के अतिरिक्त और कहीं देखने को नहीं मिला। करतूतों का ऐसा रोमांचकारी दिग्दर्शन इस फिल्म के अतिरिक्त और कहीं देखने को नहीं मिला।

महर्षि से पूछा गया-आप गंगा को क्या मानते हो? ''यह भी और जलों की भांति जल है, निश्चय करके मैं गंगा को श्रेष्ठ मानता हूँ क्योंकि किसी अन्य नदी का जल ऐसा उत्तम और गुणसहित नहीं है। परन्तु मैं गंगाजी को मुक्ति देने और पाप छुड़ाने का साधन नहीं मान सकता।''

महर्षि दयानन्द के 150 वर्षो बाद, गंगा गुणरहित व अत्यन्त मैली हो गई है। 'राम'! तेरी गंगा मैली', सही बात है। इस पृष्ठ भूमि पर हम दो-पत्नि और मै प्रयाग राज (इलाहाबाद) व काशी (बनारस) की यात्रा पर निकले।

प्रयोग में नाव में चढ़ने से पूर्व व संगम स्थल पहुँचने के पश्चात् केवट ने गंगा का माहात्मय निरूपित कर गंगा पूजन व आचमन का अनुरोध किया तब तक उसे विश्वास नहीं था कि आज प्रातःकालीन वेला में मिले दोनों यात्री जन्मना आर्यसमाजी हैं और जिसे वह धर्मभीरु महिला समझ रहा है वह नैष्टिक वैदिकधर्मी, विज्ञान विषय की स्नातिका है। गऊघाट से संगम तक ले जाने-लाने का किराया पांच सौ रूपया तय करने के बाद भी उसकी इच्छा और ''लूटने'' की थी। संगम में नाव पंक्तिबद्ध अन्य नावों के पास ले जाने का अतिरिक्त पचास रूपया मांगने पर पत्नि ने मना कर दिया। संगम पर भी गंगाजल का आचमन नहीं किया। झल्लाकर केवट बोला, तब आप संगम पर आए ही क्यों है? पत्नि ने उत्तर दिया कि गंगा और यमुना का संगम हमने देख लिया। एक कम मटमैली है और एक ज्यादा। बस, वापिस ले चलो। रास्ते में उसने कथा सुनाई निषादराज द्वारा भगवान राम को गंगापार कराने की। तत्काल एक लकड़ी का टुकड़ा नाव में से निकाला-गंगा में डुबाया और सामने प्रस्तुत कर, स्पर्श कर दान में कुछ देने को कहा। पत्नि ने न फट्टा स्पर्श किया और न दान दिया।

इलाहाबाद में सर सैयद अहमद खां का अत्यधिक विशाल एवं भव्य महल जिसे आज स्वराज भवन के नाम से जाना जाता है एवं जो स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी का जन्म स्थल है, महर्षि दयानन्द और सर सैयद अहमद खां की भेंट का स्मरण करा गया। सर सैयद अहमद खां महर्षि दयानन्द से मिलने पहुँचे। महर्षि ने उन्हें अपने समीप बैठने को कहा। सर सैयद अहमद खां का उत्तर था कि उनकी जगह तो पीरों और फकीरों के कदमों में है और वह महर्षि के कदमों में ही बैठे। सर सैयद अहमद खां जज थे। अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी के संस्थापक। महर्षि दयानन्द के विचारों से प्रभावित होकर उन्होंने कुरआन शरीफ का जो भाष्य किया उसे मुस्लिम विद्वानों ने स्वीकार नहीं किया। इसे इतना अधिक विकृत समझा कि उनके खिलाफ मदीना (साउदी अरेबिया) से फतवा जारी करवा लाए। फतवे को कार्यान्वित नहीं किया जा सका जैसे अब तक बांग्लादेश की प्रख्यात लेखिका तसलीमा नसरीन को ''लज्जा'' उपन्यास लिखने पर और भारत मूल के ब्रिटिश नागरिक सलमान रश्दी को ''सैटैनिक वर्सेज'' लिखने पर जारी किया गया फतवा अब तक कार्यान्वित नहीं किया जा सका है।

अल्फ्रेड पार्क या कम्पनी बाग जिसे अब आजाद पार्क कहा जाता है, क्रांतिकारियों के सिरमौर प्रातः स्मरणीय चन्द्रशेखर आजाद की 25 वर्ष की अल्प आयु में, एक विश्वासघाती के कारण 27 फरवरी 1931 को हुई शहादत का गवाह है। स्मरण हो आया। आजाद ने कहा था-''हम आजाद हैं और आजाद ही रहेंगे।'' पुलिस से हुए खूनी संघर्ष में आजाद ने अंतिम गोली अपनी कनपटी पर मारी। हजारो-लाखों शहीदों के स्वरूप मिली आजादी को प्रचारित किया गया। दे दी हमें आजादी, बिना खड्ग, बिना ढाल, साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल। वाह क्या खूब कहा है!

वोल्वो ने दो घन्टे में काशी पहुँचा दिया। महर्षि के जीवन का हर वह प्रमुख स्थान जहाँ उनके

व्यक्तित्व की अमित छाप पड़ी हमारे लिए तीर्थ है। मुझे याद है-मथुरा के सर्वाधिक प्रतिष्ठित पौराणिक धर्माचार्य रंगास्वामी के शिष्यों के गुरुवर्य विरजानन्द के शिष्यों द्वारा पराजित होने पर, रंगाचारी स्वामी ने काशी के पण्डितों से अपने शिष्यों के पक्ष में व्यवस्था (निर्णय) प्राप्त कर ली थी कि विजय रंगाचारी के शिष्यों की हुई है। जब गुरुवर्य विरजानन्द जी ने उन्हें सूचित किया कि आपका निर्णय गलत है तब उनका उत्तर था कि आपका पक्ष सही था लेकिन जब एक बार निर्णय दिया जा चुका है तब उसे परिवर्तित नहीं किया जा सकता। काशी की ''व्यवस्था'' सम्पूर्ण भारत के विद्वानों के लिए अंतिम रूप से मान्य थी। गुरुवर्य विरजानन्द ने मथुरा के अंग्रेज जिलीधीश से शर्त में ठहरे हुए 500/- रूपये दिलवाने का निवेदन किया पर उन्होंने धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप न करने की नीति का हवाला देकर मामला टाल दिया। गुरुवर्य विरजानन्द को यह मर्मान्तिक पीड़ा झेलनी पड़ी। क्या यह सब वृतान्त गुरुवर्य विरजानन्द जी ने दयानन्द जी को नहीं बताया होगा? असम्भव! समरांगण में भेजने से पूर्व पुराणपंथियों की धूर्तता का आभास अवश्य कराया होगा।

काशी-तीन लोकों से न्यारी। विश्वनाथ (महादेव) की काशी! ढोंढीराज (गणेश) और लाट भैरव द्वारा रक्षित, जिनकी सहायता को तैंतीस करोड़ देवता उपस्थित और स्वयं काशीनरेश ईश्वरनारायणसिंह द्वारा पूजित-सेवित काशी।

बड़ी उत्सुकता थी कि वाराणसी पहुँच कर-आनन्दबाग, दुर्गाकुण्ड पहुँच कर उस स्थल का दर्शन करें जहाँ ऋषिवर दयानन्द ने, अभी-अभी 140 वर्ष पूर्व ही, काशी के महिमा मण्डित समस्त भारत के पूज्य, श्रेष्ठ पण्डितों को धूल चटाई थी। स्मरण रहे महर्षि ने सात बार काशी को रौंदा था।

महर्षि शास्त्रार्थ से दो माह पूर्व रामनगर में रामलीला के मेले में 21 सितम्बर 1869 को पहुँच गए थे। एक माह पश्चात 22 अक्टूबर को अमेठी के राजा माधोसिंह के दुर्गाकुण्ड स्थित आनन्द बाग में ठहरे। महर्षि ने विपक्ष के धुरंधर विद्वानों की विद्वता का पूर्णतया आकलन कर लिया था। तभी तो उन्होंने पूर्ण आत्मविश्वास के साथ कहा-''ज्ञात काशीस्थानां पाण्डित्यम्''। 16 नवम्बर 1869 को इसी बाग में हुए प्रसिद्ध शास्त्रार्थ का विवरण सभी प्रबुद्ध ऋर्षि भक्तों को ज्ञात है।

आज इस स्थल पर एक यज्ञशाला मात्र है। इसी स्थान से दुर्गाकुण्ड आर्यसमाज संचालित होता है। 20-22 सदस्य सभासद है। नित्य प्रात: 6 बजे से 7 बजे तक अग्निहोत्र किया जाता है। श्री रामदेव शास्त्री जी के साथ हम भी प्रात: 6 बजे पहुँच गए। यज्ञ पर डॉ. नरेन्द्र कपूर, उपप्रधान श्री राजाराम, कोषाध्यक्ष श्री विश्वनाथ व एक युवक उपस्थित था।

इससे पूर्व रविवार को काशी की सबसे बड़ी, स्वयं महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज ''बुलानाला'' पहुँचे। प्रात: 8 बजे तक यज्ञशाला में सफाई नहीं हुई थी। यज्ञ में पुरोहित श्री रामेदव शास्त्री, उनकी पत्नि, पुत्र व पुत्री के अतिरिक्त केवल दो व्यक्ति थे। एक भी पदाधि कारी नहीं था, बाकी पीड़ादायक कथा-व्यथा अधिकांश आर्यसमाजों की तरह जड़ से लेकर शीर्षस्थ स्थल तक व्याप्त कैंसर की है।

बनारस विश्वविद्यालय के धातुविज्ञान विभाग से सेवानिवृत वैज्ञानिक प्रोफेसर अशोक कुमार गुगलानी विश्वविद्यालय दिखाने ले गएं आश्चर्य हुआ बिड़ला मन्दिर की यज्ञशाला में आर्यसमाज संचालित होता है। अत्यंत उच्च शिक्षा प्राप्त 20 प्रोफेसर्स सभासद हैं। प्रत्येक शनिवार को यज्ञ एवं भजन होता है। सकारात्मक धार्मिक चर्चा होती है। खण्डन की अपेक्षा मण्डन पर अधिक बल देते हैं। शंका करने पर वैदिक दृष्टि कोण बता दिया जाता है। विश्वविद्यालय स्थित, बिरला मन्दिर में ''कृणवन्तां विश्वमार्यम'' का क्या अर्थ संगमरमर की पट्टिका पर उत्कीर्ण है, जरा देखिये तो-सम्पूर्ण जगत को आर्य धर्मी अर्थात् सत्यधर्मी बनाओ। आर्य धर्म का विश्व में प्रचार करो। वेद तथा आर्य धर्म सृष्टि के आदि से चला आ रहा है। वह परिपूर्ण सभ्यता को प्रकाशित करता है। उसके सत्य सिद्धान्त और तर्क देशकाल के सम्मुख यथार्थ बने रहते हैं। मनुष्य मात्र को इहलौकिक, पारलौकिक उन्नति का पथ दिखाता हुआ सदा के लिए मोक्ष (निर्वाण) अर्थात् परमानन्द से मिलने का मार्ग भी दिखाता है। यह उत्कीर्ण है तथाकथित घोर पौराणिक महामन। मदनमोहन मालवीय के विश्वविद्यालय में स्थित, घोर पौराणिक बिरलाजी के विषणुमन्दिर में। बताइए ऐसा किसी आर्यसमाज में उत्कीर्ण मिलता है?

काशी की यात्रा पूरी नहीं हो सकती यदि आपने घाटों के दर्शन नहीं किए। संध्याकालीन आरती नहीं देखी और विश्वनाथ के दर्शन नहीं किए। कड़ी सुरक्षा में हैं बाबा विश्वनाथ। आतंकवादियों द्वारा बम विस्कोट से तलवारों का जमाना बाबर के साथ चला गया) उड़ाए जाने की आशंका को देखकर पुलिस प्रबन्ध ''चाक चौबस्त'' है। कड़ी सुरक्षा जांच के पश्चात् विश्वनाथ की मूर्ति के समक्ष लगे बोर्ड को देखकर चौंके-जेबकतरों से सावधान! यानि दुष्टों से, जेबकतरों से बचाने की गारंटी बाबा विश्वनाथ नहीं लगें? खुद उनकी सुरक्षा के लिए कमाण्डों तैनात हैं। यही मस्तिष्क में चल रहा था कि धकियाये गए और बाहर निकल आए। एक प्रौढ़ पुलिस अधिकारी ने पूछा-इतनी जल्दी दर्शन कर आए? प्रत्युत्तर में कहा-बाबा विश्वनाथ की आप सुरक्षा कर रहे हैं और बाबा ने लिखवा दिया है-''जेबकतरों से सावधान।'' धकियाए जाने पर निकलना ही उचित था, पुलिस अधिकारी श्वते मूछो में मुस्करा दिया।

एक आश्चर्य और-काशी विश्वनाथ के मुख्य दक्षिणी द्वार पर अंकित है-''आर्य धर्मे तराणां प्रवेशों निषिद्ध'' आर्य धर्म के मानने वालों के अतिरिक्त अन्य धर्मावल्मिब्यों का प्रवेश मना है। अब आर्य धर्म की परिभाषा महर्षि दयानन्द के अतिरिक्त कौन बतलाता ? विशुद्धानन्द सरस्वती या बालशास्त्री!

पाणिनी कन्या महाविद्यालय और उसके परिसर में निर्माणाधीन ''शब्द ब्रह्म'' मन्दिर के उल्लेख के बिना काशी-यात्रा विवरण अूधरा ही रह जायेगा। दो ऋषिकाएँ आचार्यो डॉ. मेघा एवं डॉ. नन्दिता शास्त्री 800 छात्राओं के व्यक्तित्व निर्माणकार्य में संलग्न है। शास्त्रीय विषयों के अतिरिक्त आधुनिक विषय विज्ञान एवं कम्प्यूटर साइंस की शिक्षा की व्यवस्था है। सामान्य वार्तालाप भी संस्कृत में ही किया जाता है। बड़ा मधुर, कर्णप्रिय लगा। शब्द ब्रह्म मन्दिर जिसका नामकरण पाणिनी ऋषि के नाम पर होगा, संगमरमर का अत्यन्त भव्य, अनूठा मन्दिर होगा। विश्व का पहला मन्दिर। महर्षि पाणिनी की अष्टाध्यायी के चार हजार सूत्र संगमरमर की चारों दिशाओं में पटिटकाओं पर उत्कीर्ण किए जा चुके हैं। निचले खण्ड में मुद्रणालय व रिसर्च सैन्टर के कक्ष हैं। सात करोड़ की इस विशाल योजना का पचास प्रतिशत से अधिक कार्य हो चुका है। सब कार्य सात्विक दान से पूरा हो रहा है। एम.डी.एच. वाले महाशय धर्मपाल जी ने पांच लाख की राशि दी है। आर्यसमाजों से कोई आर्थिक सहयोग अभी तक नहीं मिला। ध्यान रहे, गुरु विरजानन्द यदि अपने छात्र दयानन्द जी को अष्टाध्यायी पढ़ने अनेक विदेशी छात्र आते रहते हैं। इन ऋषिकाओं का पिछले चार वर्षो से घर छोड़कर सपत्नीक सहयोग कर रहे हैं। स्वतंत्रता सेनानी डॉ. नन्दनम् सत्यम। अजीब धुन के पक्के हैं डॉ. साहब। निर्माण कार्य के अतिरिक्त दानदाताओं से भी निरन्तर सम्पर्क कर कार्य को सम्पूर्ण करने की प्रबल उत्कण्ठा। संकोचवश हमने एक हजार की राशि दी। उसे धन्यवाद पूर्वक स्वीकार करते हुए कहा-हमारे लिये तो इस समय एक-एक पैसा भी अमूल्य दान है।

संगीत सम्राट तानसेन की नगरी ग्वालियर आज भी तान सेन की नगरी के रूप में देशभर में प्रसिद्ध है। अत: हमें बेनियाबाग स्थित शहनाई सम्राट बिस्मिला खां साहब की ड्योढ़ी पर जाना जरूरी था। बिस्मिल्ला खां साहब के पाते सिफ्ते हुसैन, पड़पोते गाजी अब्बास (4 वर्ष) पड़पोती तंजिला फातिमा (6 वर्ष) से मुलाकात हुई। जनाब सिफ्ते हुसैन बड़े मीठे अन्दाज में बिस्मिलला खां साहब के बारे में बताते रहे। पदमश्री, पद्म भूषण, व भारत रत्न के अलंकरण दीवार पर एक पंक्ति में सजे हुए थे। संगीत सम्राट तानसेन, बैजू बावरा, भारतरत्न सुश्री लता मंगेशकर (जीवित) की श्रृंखला में स्वर्गीय बिस्मिल्ला खां साहब की गणना की जावेगी। अब कभी दूसरा बिस्मिल्ला खां पैदा नहीं हो सकता।

सारनाथ व लमही के उल्लेख के बिना यह यात्रा वृतान्त अधूरा ही रहेगा। ''सारनाथ'' युगप्रर्वतक शाक्यमुनि गौतम बुद्ध के प्रथम प्रवचन की साक्षी है जो उन्होंने अपने पांच शिष्यों को दिया था। भव्य स्मारक है और ''लमही'' महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त हिन्दी के उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द का जन्मस्थान है। इनकी पावन स्मृतियों को कोटिश नमन।

- (से.नि.) वरिष्ठ लेखाधिकारी (केन्द्र शासन) 22 नगर निगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर, मध्य प्रदेश

संघर्ष मनुष्य को जीवन जीने की कला सिखाने के लिए समुपस्थित होते है। इसलिए संघर्षो को अपना सौभाग्य समझना चाहिए।
-राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

अन्न एवं अन्नार्थ प्राप्त दान

स्व. इन्दु देवी सुपुत्री श्री अंगुरी देवी पत्नी श्री रणवीर सिंह छिल्लर, बहादुरगढ़	5100/-
श्रीमती अन्नपूर्णा भट्टाचार्य (मैनेजर कैनरा बैंक), दिल्ली	3860/-
श्री रमीकेश सुपुत्र श्री मोहिन्द्र सिंह गढी सांपला रोहतक	2100/-
श्री सुरेन्द्र जी राठी सुपुत्र श्री राणा राठी बहादुरगढ़	2100/-
श्रीमती सोनिया जी पत्नी श्री अनिल जी मलिक बहादुरगढ़	2100/-
श्री राजेश गुप्ता जी गुजरांवाला टाऊन दिल्ली	2100/-
श्रीमती सावित्री देवी पत्नी कर्नल राजेन्द्र सहरावत, बहादुरगढ़	2100/-
श्रीमती चन्द्रकान्ता पत्नी श्री कन्हैया लाल जी आर्य, गुड़गांव	1100/-
श्रीमती फुलवती वत्स पत्नी श्री सत्यपाल वत्य आर्य, बहादुरगढ़	1100/-
आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट नूह (मेवात)	1100/-
श्री दरबार सिंह जी गुलिया सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्री सत्यव्रत शास्त्री सुपुत्र स्व. महाशय बलवन्त रोहतक	1100/-
श्रीमती मायावती मदान धर्मपुरा बहादुरगढ़	1100/-
श्रीमती शकुन्तला देवी, बहादुरगढ़	1100/-
श्री अनिल जी आनन्द कीर्ति नगर, नई दिल्ली	1100/-
श्री मानिक ग्रोवर किला मोहल्ला, बहादुरगढ़	1100/-
स्व. श्री ईश्वर सिंह परिवार काठमण्डी बहादुरगढ़	1100/-
श्री बलेश कटारिया नांगलोई रोड, बहादुरगढ़	1000/-
श्रीमती रामदुलारी आर्या	1000/-
मेधाली सुपुत्री बिजेन्द्र शर्मा जी नेहरू पार्क, बहादुरगढ़	1000/-
श्री कृष्ण सुपुत्र सुषमा टीकरी कलां दिल्ली	1000/-
श्री जे.के. अग्रवाल बैंक कॉलोनी बहादुरगढ़	600/-
श्री राजकरण जी आर्य प्रधान आर्य समाज बादली	501/-
श्री वजीर सिंह जी चहल सैक्टर-6, बहादुरगढ़	500/-
श्री लक्ष्मीनारायण काठमण्डी, बहादुरगढ़	500/-
श्री वीरेन्द्र आर्य ग्राम दौलताबाद गुड़गांव	500/-
श्री राजिन्द्र ओहल्याण सुपुत्र श्री तालेराम नम्बर दार गढ़ी, सांपला	500/-
श्री सत्यप्रकाश जी वशिष्ठ आदर्श नगर, बहादुरगढ़	500/-
श्री सुभाष गुगलानी गुड़गांव	500/-
वरिष्ठ नागरिक क्लब बहादुरगढ़	500/-
मास्टर हरिसिंह जी दहिया टीचर कॉलोनी, बहादुरगढ़	500/-

विविध वस्तुएं

श्री विवेक वर्मा जी, बहादुरगढ़	20 किलो आटा
श्री बलवान सिंह सांगवान पूर्व सचिव नगरपालिका, बहा.	25 किलो चावल
चौ. सुरेन्द्र सिंह गांव बीड, जिला झज्जर	50 किलो गेहूं, 500/-रूपये
श्रीमती मायावती मदान धर्मपुरा बहादुरगढ़	1 समय का विशिष्ट भोजन
श्रीमती बसन्ती देवी पत्नी हैडमास्टर आनंद सिंह बहादुरगढ़	1 समय का विशिष्ट भोजन
कबीर आश्रम लाईन पार, बहादुरगढ़	1 समय का विशिष्ट भोजन
श्री भूपसिंह डबास शनि मन्दिर टीकरी दिल्ली	1 टीन सरसो तेल
श्री शुक्ला जी नैनपाल मन्दिर टीकरी कंला दिल्ली	1 टीन सरसो तेल
श्री रवि अञ्जलि प्रोपटी सैक्टर-6, बहा.	1 समय का विशिष्ट भोजन
श्री संजय ओहल्याण सुपुत्र श्री राम किशनगढ़ी सांपला	1500/-
श्री विश्वनाथ आर्य अग्रवाल कॉलोनी, बहादुरगढ़	2 क्विंटल गेहूं, 1 कटटा मूंग दाल

गौशाला हेतु प्राप्त दान

श्री अनिल रेखा वरेजा, बालाजी नाथ एण्ड टाईल्स गुड़गांव	2500/-
श्रीरामपत जी आर्य नूना माजरू	1111/-
श्री आजाद सिंह दूहन पूर्व आचार्य झज्जर	1100/-
सत्संग मंडली सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्री ईश्वरचन्द्र हलवाई बहादुरगढ़	600/-
श्री अनिल वर्मा शिवाजी नगर, गुड़गांव	551/-
ग्रोवर परिवार पटेल नगर दिल्ली	500/-
श्री अशोक कुमार जी ग्रा. नारंगपुर गुड़गांव	500/-
श्री खीरबाट परिवार, नई कॉलोनी गुड़गांव	500/-
श्री हंसराज जी बहादुरगढ़	500/-
श्री राजबीर सिंह आर्य	500/-
श्री लक्ष्य राणा जी बहादुरगढ़	500/-

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं–

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़,झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-A0211948

मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 **द्वारा मयंक प्रिन्टर्स**, 2199/64, **नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली**-110005, **दूरभाष**-41548503, **चलभाष**-9810580474 **से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से** 15 **जुलाई** 2014 **को प्रकाशित एवं प्रसारित।**

बृहद् यज्ञ एवं ध्यान-योग शिविर की सुन्दर झलकियां

आत्म - शुद्धि - पथ मासिक

जुलाई 2014

छपी पुस्तक - पत्रिका

एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646

पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2012-14

प्रेषक - आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में -

बृहद् यज्ञ एवं ध्यान-योग शिविर में वक्तव्य देते हुए